सप्ततीर्थ

लेखक :
श्री निरुपादय्या स्वामी
हिंदी रत्न (स्वर्णपदक)
साहित्य रत्न, विद्यालंकार

प्रकाशक :
श्री अडवि सिद्धेश्वर शरण संघ
ता. मुधोल) हिरेआलगुण्डि. (जि. विजापूर

लेखक :

श्री निरुपाध्यया स्वामी
हिंदी रत्न (स्वर्णपदक)
साहित्य रत्न, विद्यालंकार

प्रकाशक :

श्री अडवि सिद्धेश्वर शरण संघ
ता. मुधोल) हिरेआलगुण्डि. (जि. विजापूर

मुद्रक :
विद्यारण्य प्रिंटिंग प्रेस,
बागलकोट.

मूल्य : रु. ३-००

अन्य प्राप्तिस्थान :
* हिंदी प्रचार संघ, मुधोल.
* विद्यारण्य हिंदी विद्यालय, बागलको

समर्पण

श्री चरणों में

लिंगैक्य, श्री. नि. प्र. सिद्धराम स्वामी जी
अडवीस्वामी मठ, अंकलगी.

लेखक
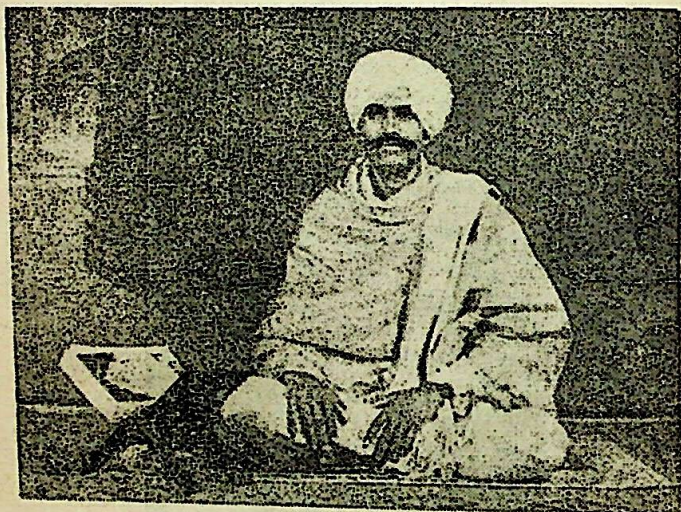
श्री निरुपादय्या स्वामी जी

दो बातें

विरागी श्री निरुपादन्ना स्वामी जी एक मठ के अधिपति होते हुए भी कन्नड और हिन्दी भाषाओं के साहित्यिक क्षेत्र में कृषि करते आये हैं। कन्नड की त्रिपदी शैली आपको करगत है। हिन्दी में भी कविता लिखने का साहस आपने किया है। काशी में रहने के कारण आप की अभिरुचि हिन्दी की ओर सहज बढ़ गई है। अभी वह पनप रही है। हिन्दी के गद्य में भी आप की कलम घिस चली है। "सप्ततीर्थ" कहानियों का एक सुन्दर संग्रह है। इस में समाज सुधारवादी एवं भावुक स्वामी जी के निजी अनुभव अभिव्यक्त हैं। 'सन्यासी सन्देश' में समाजसुधार की पुकार है। 'बासुरी बसुवा' में कलागुरु और योगी की स्वतन्त्रता का सन्देश गूंज उठा है। 'विस्मृति' में विषयविलास का परिवर्तन प्रायश्चित के रुप में होता है। मनुष्य को अपने को उन्नत बनाने के लिए करुणा का आलंबन लेना चाहिए— 'यह जीव का धर्म है'। बाकी कहानियों में भी ऊँचे आदर्शों की चिनगारी सुलगती है।

एक बात मुझे बहुत खटकती है। वह भाषा की अशुद्धि है। पंक्ति पंक्ति में अशुद्धियाँ झाँकती हैं। व्याकरण के दोष भर-पूर हैं। आशा है, उत्साही स्वामी जी अगली आवृत्ति में इन दोषों का निवारण अवश्य करेंगे।

श्री स्वामी जी इस साहित्यिक साहस के निमित्त बधाई के पात्र हैं।

—जी. एम्. उमापति शास्त्री

लेखक की ओर से

जीवन एक कहानी है। वह कल्पना के सहारे घटनात्मक होते चलता है। एक २ बार कल्पना कल्पना में ही रह जाती है। इस जीवन कहानी में सुखद और दुखद सम्मिश्र तो अवश्य है। कुछ आलोचकोंने आनन्द को सत्य मानते हैं। किन्तु यहाँ एक विचार रेखा उदय होता है कि आनन्द सत्य है या आनन्द के मूल कारण सत्य है ?

आधार के बिना आनन्द नहीं होता। किसी घटना को ले कर अपनी भावना में समावेश करते हुए सुखद या दुखद का अनुभव करता है। यदि घटना लुप्त हो जाय तो आनन्द भी लुप्त हो जाएगा।

समाज में किसी न किसी रूप में कहानियों का प्रयोग होते आ रहा है। भाव चित्र एक रेखा बनते हमारे सामने कहानी नाम से आकर बैठता है। इसलिए कहानी को जीवन का प्रति-चित्र मानता हूं। जब पाठक कहानी को पढ़ने लगता है। तब उसको शब्दचित्र ही भावचित्र होते हुए आये हुए पात्रगण के भाव का ग्रहण करते तत् स्वरूप होने आनन्द का अनुभव करता है। साथ ही उस पात्र के साथ अनुकंप सहानुभूति उदय हो जाता है।

उपन्यास, नाटक, और काव्य का मूल कहानी को मानता हूं। कहानी की कहानी पूर्ण रुपेण समझकर एक रुप देना प्रारंभ करता है। इसलिए कहानी को साहित्य का प्रधान अंग मानता हूं। अनुभूति के बिना कौन कहानियों को लिखता है ?

इस स्थिति को भाव में रखकर ये सात कहानियाँ आप के सामने रखा हूँ। इस ग्रन्थ का नाम सप्ततीर्थ इसलिए रखा है। कि इन सात कहानियों में किसी न किसी रूप से शराब (तीर्थ) का प्रसंग आया है।

रसगीत मुद्रण होते समय सप्ततीर्थ की कहानियाँ सिद्ध हो गयी थी। श्री बसवराज मटगार (V. A) नन्दगांव, इन्होंने इस ग्रन्थको स्वखर्चसे मुद्रिक करके दिया। यह कार्य चिरस्मरणीय है।

प्रस्ताविक लेखक प्रो. जी. एम्. उमापति शास्त्री M. A. और मुद्रक श्रीमान लोखण्डे इन महाशयों को यादकर के चार शब्द समाप्त करता हूँ। तथा इन महाशयों को श्री अडवेश आरोग्य, ऐश्वर्य दें।

दिनांक ६-१२-७६ —लेखक

अनुक्रमणिका

वाँ! वाँ!! वाँ!!! कितनी खूब काफी तेज एक बोतल में चार आदमी को खूब नशा ---।

यह आवाज कहीं से आ रही थीं। किसीने सुना और किसीने उसको ठुकरा दिया, कुछ समय के बाद दोनों सहमत होकर उसी रास्ते पर चले गये।

यह उस समयकी बात है, जब सरकारने शराब की दूकानें हर एक गाँव में भी खोल दी थीं। और उनके लाभमें अपना कानून चलाती थी। कोई ऐसा व्यक्ति नहीं मिलता, जो शराब नहीं

पीता हो, हर एक छोटा बालक भी उसका स्वाद ले रहा था। समाज में रहने से सभी को समाज का नियम मालुम होता है कि किस धर्म में शराब पोने का नियम नही है उस धर्म में भी शराब के बोतल, शराब के कुँभ की पूजा सुरु हुई थो। वे क्या जाने आर तो शराब, सब कुछ खाते थे, अपने की तरह इन्हीं को भी बनाना सुरु किया था। करुणा हीन व्यक्ति अपने साथियों को भी अपने भाव सिखाता है। तब सभी की वाणी थी– "आज हमारे घर पथिक आया था उसको उसीसे संत्रप्त किया गया, सीमोल्लघन करा के घर लौटा। आजकल अतिथि सत्कार की चीज है, उस समय इतना घोर प्रचार नहीं था, था केवल खाना, पीना। आजकल किसी एक घरमें चाय पीने की आवाज सुनते हैं भोजन कराते नहीं, भूख तो बहुत लगती है। उस समय रोटी दाल मिले तो बहुत अच्छा होता। वह कुछ नहीं, उस भूख का स्मशान करनेवाली वहां आ गयी चाय बीडी आदि ....

आदेश जो है वह अपने छोटे व्यक्तियों को दिया जाता है, उपदेश और संदेश सभी को हो सकता है। सदेश, उपदेश, आदेश इन तीनोंका कार्य समाज जीवोंका कल्याण ही है, उन्हीं तीनों को करता रहा एक सन्यासी।

" सन्यासी कहने के लिए तो वह संपूर्ण सन्यासी न था, केवल पत्नी न थी और सब कुछ मठ, मंदिर, जमीन, शिष्यगण आदि थे। कोई कोई समझते हैं कि जो व्यक्ति शादी नहीं करता है, वह सन्यासी है।

उनके पास एक न एक आदमी रहता था। बात-चीत करते थे। "जा विश्वमें वस्तु हं, सभी अपने में हैं; सभी मिलकर शरीर धारण हुआ हं. मं उसमें हूँ। इसलिए उस वस्तु का भोग करने सदा जीव व्यस्त रहना हैं, यह वाणी सीधे से निकली, वे सुन रहे थे।' भस्म जटाधारी को देखने म एक तरह सभी को आनंद मिलता था, कारण इसलिए कहते हैं कि विभूति में भी आकर्षण हैं। वाणो गंभीर, बडी आँख, बहुत उंची शिवचिन्हधारी था। लबी मूंछ रहने के कारण देखने में उग्र दिखाता। शराब गांजी पीते, तो भी भजन करने बजाने में प्रवीण था।

इस वासना सन्यासो को ही टिकता है, प्रापंचिक को नहीं। संसारिक पत्नी प्रेम में रत रहे तो, वह नशामें आसक्त रहता है। कोई भविष्य पूछने आये तो एक बोतल उस तीर्थ का रखकर ही पूछते। इस नशामें जो बात निकलता, वह सच्चा ब्रम्हवाक्य होता था। लोग कहते– जीभ के अग्रमें चिन्ह है, जो कहेगा वह सिद्धांत होगा।

निराभारी पुरुष शान्ति और उग्र रहते हैं, जितना शान्त रहते हैं प्रसंगानुसार उतना ही क्रोधी बनते हैं। कब शान्त रहते कब क्रोध कह नहीं सकता। एक कहावत है कि "सन्यास को क्रोध बनाकर शाप न पूछना भोजन कराके आशीर्वाद न पूछना" यह ठीक ही है ऐसी घटनाएँ हो गई हं। उस संन्यासी के पास भक्त, भुक्त लोग भी आया करते थे। किसी पुराने बार को दुहराना श्याम हुते शराब पीकर– बाबाऽऽ अपनो कृपाऽऽ मेंऽऽऽ सदा

बेटा होकर ही रहूँगा, ऐसे बकते जाते थे। उनमें उसके ग्राम के प्रमुख लोग थे, प्रमुख थे केवल बातमें, खाने में और किसी में नहीं। खूब बातें करते कुछ न देते। केवल वही जो व्यक्ति उस सन्यासी से भविष्य पूछकर जाने के बाद उसका फल ठीक निकला हो। उसी द्रव्य से वहाँ के सभी दैनिक कार्य दासोह पूज्यापाठ शराबादि नियमित रुपसे चलते।

उस योगी का नाम क्या था पता नहीं, सभी बाबाजी, पिताजी कहते। एक दिन नशामग्न थे। सामने लोग बैठे थे। इनमें कुछ उस उपदेश सुनकर उस तरह चलने के लिए, विषय वासना के लिए।

"जीव एक जीव को रक्षा करना ही धर्म है। प्राचीन वैदिक संस्कृति को सागर रुपसे प्रकाशन करके सुधारस बनाना है। कम करन ज्ञान चाहिए, बिना कर्म कोई जीव टिक नहीं सकता। ज्ञान से जीवन को साधकना बनाना ही धर्म है, प्रथम अंतर्मुखी होकर, विचार करके एक निर्णय पर आना, ब्रम्हानंद प्राप्त करना ही जीवन की प्रतिभा और तपस्या है। माता और पुत्र, गुरु और शिष्य, पति और पत्नी का जो निकट सम्बध है। इन तीनों में एक ही भाव, प्रेम रहता है, उसी तरह ज्ञान और कर्म में है, ज्ञान और कर्म हमारे जीवन में माता और पिता है, ज्ञान माता का रुप धारण, कर्म पिता का रुप धारण करके जीवनको उत्पन्ति और समाप्ति करते हैं। जब हम पैदा होते हैं, तब से ही ज्ञान व कर्म मिलकर ही रहना है, पर उसका भेद मालूम नहीं होता,

इसलिए जीव को संसारमें अपयश होना पडता है। यदि पूर्ण परिचय पाना हो तो सत्संग करना चाहिए.... ।

इसी तरह ज्ञान प्रवाह तरंग के पीछे तरंग अपनी शक्ति दिखाने के लिए जोर आ रहा था। बिना पीने से उनके मुंह से उद्‌भादन नहीं होता। सत्यवाणि, चिंतन, उसको स्वीकार करनें के बाद। इस संसारमें हम पाते हैं पत्नी पतिपर आधारित, पुत्र माता पिता के आधार पर रहते हैं तो इन तीनों के आधार सन्यासी या गुरुजी के बोध है। जब ससांरमें विकट परिस्थिति आनेपर ही उस योगी के पास जाते हैं। व्यक्ति अपनी अपनी शक्तिसे कुटुंब का बचाव की ता सन्यासी ने संयम, सत्, उपदेश से सर्व जीवों को अपनी ओर खींच लेता है। कोई कार्य संघर्ष या सहयोग से समाप्त होता है, बिना किसी से नहीं। जो कुच्छ भी हो मानव हृदय को उस समय सन्यासी ने जीत लिया था।

* * * * *

उसी संघो में से एकने दूसरे से पूछा, आप लोग कहते हैं- करते नहीं।

उत्तर दिया- ज्ञानी पुरुष कुछ भी कर सकते हैं कैसे भी रह सकते हैं।

हाँ! क्या वे चोरी भी कर सकते हैं ?

हाँ! कर सकते हैं, वे चोरी करते हैं– हम तुम जैसे सोना चाँदी नहीं। कहते हैं केवल ज्ञान मानवता प्रेम। यदि उन्होंने चोरी की (ज्ञाननिधि) तो, उसको अपने पास रखते भी नहीं, उसी ज्ञान निधि को अज्ञानी को दान कर देते हैं। हमारा मन सदा काल चाहता है-मैं अकेला पंडित हो जाऊँ यदि दूसरे को संदेश दे दिया तो वही हम से बड़ा पंडित न हो जाय, आगे बढ़ा न जा सके। हम तुम जैसे बुद्धू न होतें वे लोग – – – –।

सिर नीचा करके सुनता रहा।

* * * * *

संन्यासी और ग्राम प्रमुख अन्य गणों का संयोग उसी तरह अंत्य तक न रह सका। इसका कारण इतना ही था नशाबंदी। न्याय धर्म में भेद करना दोष है। वे साधु की लाठी की तरह रहना चाहिए। साधु हो या सन्यासी समाज को बुरा पथ दिखाते नहीं यदि दिखाये तो उनको वह नाम ही न लगेगा। भक्तगण सन्यासी का सूत्र है।

किसी एक कारण से बावा ने पीने का नियम उल्लंघन किया। तबसे लोगों का आना जाना कम हो गया, केवल वे ही आते थे जो भाव से भक्ति करते। एक दिन बाबा के सामने एक नियम प्रमुखों ने रखा–

ऐं ! बाबाजी मठ हमारे हाथ में दो ।

सुनकर कहा– अच्छा, क्यों ?

आपकी आमदनीपर पन्चायति का अधिकार हैं ।

हाँ ! ठीक है – आजकल इस मठ में जो धार्मिक कार्यक्रम चलते हैं, बारह महिना दासोह, श्रावण पुराण, नवरात्रिपूजा, रथमेला, शिवरात्रि अनेकों हैं, इन नियमों को चलाने की एक, शासन सौगध करके लिखवाकर दीजिए ।

हाँ पहले बताईए की किस लाभसे इस मठका आधिकार प्राप्त करने आये हैं ? है हो क्या उसकी स्थाईक उत्पन्न ? किस रूपसे धार्मिक कार्य चलायेंग ?

सबने मिलकर गंभिरता से उत्तर दिया–आप भिक्षा मांगकर लाईएगा और हमको दीजिएगा, उसी से हम - - - ।

सुनते ही बाबा ने क्रोध से कहाः– नंदी के स्थान पर गधा बिठाने आये हो, लो अपना कपि अधिकार चलाओ, – कहकर अंदर जाकर योगदण्ड लेकर बाहर आये तो वहाँ किसीका चिन्ह न था ।

बाबाजी एक पेड के नीचे बैठकर कहता रहा– समय आ गया है- ऐसी धर्म जाग्रति स्थानपर उन आधुनिक लोगों का हाथ, विश्व को बढी नास्तिक धर्म को इस स्थान में लगाय तो भारतीय हिंदु धर्म का नाम ही मिट जाएगा । पहाड सुन्दर देखकर दौड

आये हैं। दुनियां में मूर्खों का ही सर्वाधिकार हैं। इन लोगों का हाथ लगाया तो ---।

इसी घटना से बाबाजी का मन बदल गया। पहले से कुछ कुछ धन मिलाकर रखा था, उस धन से धूमधाम उत्सव मनाना शुरु किया। अब तिजोरी में रखकर भविष्य की चिन्ता न करता, जैसे अन्य लोभी साधु करते हैं।

शराब पीते समय ग्राम के प्रमुख लोग सदा देदिप्यमान रहते, शराब छोडने के बाद बाहर की जीव भावों का सुरु हो गया। पन्द्रह बरस के पीछे ये घटना घटो, तब से अब तक उन प्रमुखों का आगमन यदा तदा रहता है। पर मठ में सेवा करी अधिकार बाहर के भक्तों का ही है। तब से ग्राम से शराब प्रीय कुछ प्रमुख लोग मठ को या उस सन्यासी को शिकार बनाने में व्यस्त हैं। तीस बरस से उस स्थान पर रहा हुआ उस सन्यासो के साथ एक अपने नया सन्यासी को सामने रखकर मठ के उपर दावा का भी श्री गणेश किया।

कचहरी को आना जाना सुरु हुआ था, बाबाजीको कचहरी जाना पडा। सभी स्थानों में धर्म संघो के झगडे तो काफी मिले हैं। ये लोग मठ को बटवारा करना चाहते हैं, पर सन्यासी यदि बटवारा दिया जाय मठ के सभी धार्मिक कार्य कंपन में बदल जाएगा। इसीलिए सन्यासी हाथ हाथ बंध लिया था। बल्कि धार्मिक कार्यों को रोका टोका नहीं। इन समाज को उत्साहित

करने वाली उत्सव रथ मेला था। इसमें सभी कलाकारों का मिलन होता। संगीतवादन बाबाजी के सामने चलता रहा, एकाग्र चित्तसे सुनते रहें। कला को अपनी कल्पना से तुलना कर रहें।

क्योंकि वे ताल राग, लयके कुछ ज्ञाता थे। कला और जीवन की परमावधि कहाँ तक है, और किस तरह संयोग है। विचार करते रहे। प्राचीन काल की संगीत गोष्टी, संगीत प्रवीणों का स्मरण संगीत में रही हुई संपूर्ण शक्ति को। सभी आँखे आनदमय रसातलमें अविश्रांत रुपसे सम्मिलित हो रहे थे। आंतरिक आनंद होकर प्रकासित होने में कठिनाई दिखाई देती थी। यह सच ही है अतीव आनंद होने के बाद, अतीव दुःख होने के बाद प्रकट करने में बहुत मुसीबत होती है। इसीलिए ये दोनों व्यक्ति पागल होने की संभावना है। यह सोभा, सौभाग्य, और सुमति कर्म और ज्ञानों से भरा हुआ था। राग समाप्त होते ही उसीमें स्मित निर्जलिंग नामक दस बरस के लडके ने बाबाजीके सामने आकर गाने की इच्छा प्रकट की। सफेद वस्त्र पहना हुआ उस बालकने उन हजारों शिला शिराओं के सामने धंयं देवता को धारण करके गाने लगा–

क्या है इस जीव जनमें ।।
सांप्रदाय सिद्धान्त भी नहीं । सदाचार हैं कहीं नहीं ।
संयम सहयोग नहीं नही । क्या है इस जग स्वर्गमें ।।
विस्वास धात पाता है पूर्ण । धर्म नाम को की चूर्ण ।
सोहं भावको समझा अपूर्ण । क्या हं इस पर घर में ।।
क्या है इस जीव जन में ।

बालकके मधुर कंठने उन सिला देहों को और कुछ स्थभी भूनकर लिया । सभी समझते रहे होगे की कला प्रवीण नाश है तो कला तो नाश नहीं होता, सारी सृष्टी कलासे उत्पन्न, कला से ही सर्वानंद, कलासे ही मृत्यु भी । उसी कलामें कठोर व्यक्ति को भी नतमस्तक होना पडता है । छोटा सुस्वर कन्ठ के सामने महर्षि को भी उठना पडा--

आ बच्चा- कहाँ से आया सलक्षग है तुम हो मेरी आशा किरण, भावी स्थान का-- पुनरुज्जीवन ।

* * * * *

अब बालक युवावस्थामें था, पढता रहा । कुछ वर्ष अद्ययन के लिए उत्तरापथ में था । अब स्वाद्याय तथा सेवामें निरत है । किसीसे सुना था स्वामीजी की प्रकृति १५-१६ बरस के पीछे बहुत पीने के कारण ही अब दमा खाँसी से व्यस्त है । रातभर खाँसी की बीमारी देखकर मन दुःखित होता इसको शान्त करने

फिर पीना सुरु किया। फिर आने लगे वही वुद्ध निशा भक्त लोग, लाते रहे एक दो बोतल, पीते रहे छः सात, बोलते रहे– 'ज्ञानी कैसे भी रह सकते हैं।,

नीलकंठ को भी पीने को बताते हैं कि आप स्पर्श करके हमें देना, आपको छोडकर हम कैसे उससे तृप्ति होना चाहिए। परन्तु उसने अमान्य किया।

इस शराबी की वात सुनकर एक सात्विक ने उनसे कहा कि आप इस तरह क्यों नहीं कहते–

यह मेरा भोग का वस्तु है, प्रथम आप स्पर्श करके हमें देना, बाद हम उसका सुख लेंगे। इस वाक्य को सुनते ही, नीलकन्ठसे आगे कोई जोर न किया।

ये सब शराब नाटक देखकर नीलकंठने ज्ञान के विषय में विमर्श किया– ज्ञानियों में दो दिशा है– लौकिक ज्ञानी, पारमार्थिक ज्ञानी। ज्ञानी रहते हुए भी लौकिक में रहता है, रहता भी नहीं। आप पूछते होंगे – वह ज्ञानी है तो भी उनके दैवमें शराब पीना लिखा गया तो ? - - - इसीलिए दैवको ठुकरा देने केलिए सत्सग करना चाहिए। प्रयत्न से सब कुछ छोडा जा सकता है। प्रयत्न से क्या नहीं होता ? उसमें किसीने नशामें कहा– दैव के सामने आजकल प्रयत्न कुछ नहीं कर सकता।

नवरात्रि की पूजा, पुराण तैयारी चलता रहा। फोटो के बाजू एक आट– नौ बरसकी विवाहित कन्याको देवी बनाकर

बिठाया है। नीलकन्ठने प्रथम बार देवी पुराण कहने सुरु किया था। उस दिन दैत्य का वध मधुका नैवेद्य था। कुछ पहले शराब की पूजा करके उसके बाद देवी पूजा देखने आये थे। उधर बाबा बेचित्त से पडे थे, कोई पँखा मार रहा था। उस रात भोजन न हुआ। उसके साथियों का भी नहीं। अंतिम अद्याय के दिन नीलकण्ठ दु:खित हो गया। उसी भाव में अद्याय समाप्त करके कहा–

समाज सुधारने को धार्मिक स्थान शुद्ध होना जरूरी है। धर्म स्थान व समाज इन दोनों में एक तो नीतिपर रहे, उसको देखकर दूसरा सुधार बन जाता है। यदि और कुछ दिन अपने जीवन को इस धर्म स्थान को और उज्वल प्राप्त करना हो तो आप इस शराब के साथ न आना कीजिए इतनी ही मेरी आज्ञा– भिक्षा है आपकी ओर से– –।

१२-१२-१९६४

२. बासुरी बसुआ

कौन संगीतसे अपने को भूला नहीं--
मर्द भी उस समय अपने भावको भूल जाता है न ?

* * * * *

कहीं कही बडे दो व्यक्तियों में अंतरद्वन्द्व रहता है। पाटील चाहता है अपना अधिकार चलाया जाय, देसाई कहता है मेरा विचार मान लिया जाय। इसी तरह गाँव मे दो पार्टी बनाकर हाथ पैर काटना, इत्यादि नीच कृतियों में रहते हैं। यहाँ भाव इस तरह न था, था दोनों में प्रेम स्थानांतर अधिकार।

इन बडे व्यक्तियों में बातचीत चल रही थी कि ग्राम सुधार किस तरह किया जाय। सरकारकी सहायतासे, एक नर्स दवाखाना शाला निर्माण, मन्दिरों कलाओंका उद्धार करना है। देसाई ने कहा– मैं शाला, दवाखाने के लिए भूमिदान करूँगा। शाला बनाना चाहिए क्योंकि देवालय में स्थान काफी नहीं होता। आजकल दुनिया में बालकों को ऋोडापट्र बनाना है, साथ संस्कृति, कला को भी प्रोत्साहन देना है। क्योंकि भारतीय संस्कृति कलासे पूर्ण मालूम होता है। शराब बंदी होना चाहिए, पहले हमें छोडना चाहिए, बाद अन्य लोग छोडेंगे। आजकल हम देखते हैं कि बडे बडे अफसर ऊँचे घरवालों में ब्राण्डी के बोतल होते हैं। स्थानांतर से शराब पीने का नियम पडता है, छोड नहीं सकते। यद्यमें ही पीना साथ सोना सीखते हैं। इसको बुरा नहीं कह सकते। एक दिन–

* * * * *

"एक बार मैं सा. री. ग. म. साधन कर रहा था। उसी वक्त बच्चों की आवाज घारे से साथ देने लगा–

कोई आया है, पागल जैसा है, केवल हाथ में बासुरी है, उसका किसीकी परवाह नहीं, अकेले कुएँ के पास बैठकर बजाना सुरु की है, सुननेवालों की कमी नहीं बहुत सुन्दर खूब बजाना, एसे और कोई इसके पहले न आया था।

जोर चिल्लाहट सुनकर पहले क्रोध आया मन चुप न हो सका वहाँ से उठकर बाहर आया, मैं तो बाहर आता ही न था। किसी दिन आ जाय तो ग्राम के सब लोग कोई खडा नहीं होते उस दिन वैसे ही हुआ, मैं चाहता वह कहाँ गा रहा है–

मैंने क्रोध में हो पूछा-अरे बच्चों कहाँ हैं रे ? कहाँ है रे ? मेरा स्वर शँख सुनते ही एक भी न रुका। अंत्य में अपना भला अपने में ही पडा। काई न बोलने के कारण क्रोध और भर आया। उन्मत्त केशरी होकर गाँव को छोडकर बाहर आया, दो मेरे सेवक पीछाकर रहे थे। छोडा हुआ तीर की तरह मेरा वेग था। चार फलाँग जाने के बाद स्वर सुनते ही क्रोध स्वर तरंग सागर में शान्त हो गया, स्वर की ओर रास्ता देख लिया। गाँव से छः फलाँग दूर एक कुआँ, उसके बाजू पत्थरपर बैठा हुआ, सात आठ इंच केश मुँह कान्ति हीन आँखों में तेज था। आँखें आधा बंद करके बजाने में लीन हो गया था, चारों ओर गोपालकों ने निशबंद बैठथ। श्याम हाने की परवाह न थी। जब सबने मुझको देख लिया, सब अपने आपको भूलकर दौडना सुरु की।

आजकल डरते नहीं, सामने आते हुए देखकर सीना तानकर चलते हैं आगे इससे भी गंभीर होंगे।

वादक मिलते ही सब कुछ में भूल गया। गोपालकोंने बहुत दूर जाकर विस्मित रास देखते रहे। बासुरी तो उसको अपने साथ ले जा रहा था। बहुत समय के बाद वादन समाप्त

हो गया। मैंने उसको प्रणाम करके मेरे दरबार आनेको निमंत्रण किया तो मधु से भरा बोतल को मांगा गया। मैं किसी की बात न सुनता, इतना ही नहीं मेरे सामने बात करने आते भी न थे। तब मुझे आज्ञा स्वीकार करना पडा। कोई काफी श्रीमन्त हो तो भी विद्याके सामने नत मस्तक होना पडता हैं, इसलिए कहे हैं कि विद्या सर्वत्र पूज्यन्ते। दास होकर मधु लाना मान लिया। इससे मालूम हो गया कि किसीन किसी पंडित एकन एक विषय रागपूण रहता है, साहिति हो या कलाकर या संगीतकार--। नोकर को कहकर एक बोतल मंगवाया। उसने शराब पीकर मेरे दरबार को प्रस्थान किया। आते हुए हम दोनों को सेवक व ग्रामीण देखकर विस्मित हो गये। वे समझ गये होंगे कि गाय के साथी भैंस कोकिल के साथी कौआ--। किसी प्रकार दो दिन नित्य दिनचर्या चलाया। दो दिनों में उनका कुछ कथा मालूम हो गया।

वह पहले गरीब घर में जन्म हुआ था। बडा हो गया। घरकी परिस्थिति संकट रुपमें चली, वह सह न सका। सात बरसमें घर छोडकर चल दिया। श्यामका समय था, कहीं जाकर अपना पेट भरने के लिए विचार कर रहा था। एक गाँव पहुंचा, दयालु स्त्री के सामने जाकर रोटी मांगी, पेट भर खाना, आगे रहने स्थान भी मिला। सुबह होते बातचीत होने के बाद अपने घरमें भैंस पालने मान भी लिया। मालिक बासुरी वादक था। पर शीघ्र-कोपि था। तीन बरसतक वहाँ सेवा करता रहा आगे उसका विधिचक्र परिवर्तन हो गया।

मैंने बहुत वार सुना था कि पंडित वहीं होंगे जो उच्च घर्म व स्थान में हैं। इससे यह भी पाया कि गरीबों में भी गरीबों की यह कली आज न तो कल फूलते एक दिन फल अवश्य देगा।

कुछ पेट के लिए कर्म की तो कुछ जीवन के लिए कर्म करते हैं। इसी प्रकार उनका कर्म जीवन के लिए बदल गया। एक दिन खूब बहती हुई झरना से मालिक को पार कराया, इस घटना से उनपर प्रेम दया उत्पन्न हो गया अक्षर ज्ञान के बाद बासुरी वादन भी सुरु हुआ। मालिक एक प्रापंचिक स्वामी था। पर उनको विषय वासना था, गुरु जैसे शिष्य हो गया। श्याम का एक दिन चुपके से कुछ पीकर गुरु के सामने बासुरी बजाना सुरु किया तो स्वर और बजाना उलटा तीव्र हो गया। स्वामीजी ने क्रोध से खूब डाण्टा, घर से बाहर किया, काफी क्षमायाचना की तो उसका फल कुछ न निकला। पत्नी महादेवी उसे पुत्र जीते प्रेम करता था, उसने भी समझाय, पति क्रोध के सामने महादेवी को वात्सल्य करुणा दया हराम लीन हो गई। गुरु घर छोडकर कर्नाटक में एक नाटक संघ में बासुरी वादक हो गया। संपत्ती प्राप्त करने के बाद शादी भी हुई। दिन रात शराब पीना सुरु हो गई। पत्नी आने के बाद कुछ समय देखभाल करता था, एक दो बरस होने के बाद पत्नी पर अलक्ष किया। वेतन थोडा रहे तो भी संसार ठीक चल सकता था। शराब का खर्च काफी होने लगा। नाटक मॅनेजरने पैसा नहीं दिया, नाटक छोडना पडा, उसी तरह पत्नी का भी। पत्नी को

यह अच्छा न लगा, वह आनन्द चाहती थी। बसुवाने बासुरी बजाते हुए मनानंद प्राप्त करना चाहता। घूमते-२ इस गाँव में आया था। स्वर सागर शराब पीने के बाद निकलता था। मुझे संस्थान संपत्ती थी, हर रोज कितनी शराब देना हो देकर संगीत सुनना मन चाहता, बल्कि उनका मन कौन जाने।

तीसरा दिन उपवन में बासुरी वादन करवाया चारों ओर ग्रामीण लोग विराजमान थे। सभी गणों को देखते हुए अपना कायक सुरु की –

मधुर मृदु वचनव बोलत, शान्ति सदेश दे सुन भारत।
भवि मन प्राण वन्चक न, बनो, धार्मिक फुलकित वचन सुनो ॥

बहुत देर तक राग रंजित से गुंज उठी, सभी जहाँ बैठे थे, संध्या का शान्त वातावरण, इसके बिना और किसी का किल बिल आवाज न था। बासुरी का दास हो गया था। इसीलिए पानी से तलाक लेना पडा।

मैंने यह खूब समझा कि कलाकार, साहिति, संगीतगार के साथ विवाह होना एक शिक्षित, जंगलकी अनजानी अपढ स्त्री के साथ विवाह जैसे हो जाएगा। इस ससार में एक हो भाव भक्ति मिलना कठिन है, इसके लिए महान अ.शीर्वाद चाहिए। उस दिन की बैठक समाप्त हो गई। रात का भोजन मिलकर हीं करते थे।

रात के चार बजे चुके थे, उठकर संगीत साधन सुरु किया था। उसने उस सुस्वर आवाज को सुन ली, मुझ को भी उठाया। मैंने उससे कहा– स्त्री का कान जीभ पुरुष से तेज और तीव्र रहता है। ज्ञानी साधक होना चाहिए, विना साधन से ज्ञानी अपने को सिद्ध नही मानता। बसुवा को ताल राग, का ज्ञान था, पर भी साधन करता। एक छोटे जीवसे लेकर बडे व्यक्ति तक बिना साधन या क्रिया से टिक नहीं सकता। ज्ञानी के पास करुणा रहता है क्रोध नही। उसी शक्ति सागर में सूर्योदय तक आवाज आकाश में लीन होकर अशुद्ध जीवोकों को शुद्ध करना सुरु किया था। चारों ओर खेतों में रहनेवाले किसानों को सचेत किया, मैं भी पीछे सचेत स्तब्द था। राग बद करके ही देखकर कहा– अरे! आप कब आकर बैठे हैं? क्षमा करना, बासुरी बजाकर आपको निद्रा में खलल डाला। उसी दिन उस स्थान छोडन आज्ञा मांगा, सभी कुछ देने को तैयार था न मान लिया।

पांचवा दिन भेंजने सभी व्यवस्था की, साथ भोजन सत्कार भी करवाया, उसी दिन शाम को संगीत गोष्टी बनवाया, उसमें बच्चों से लेकर सभी उपस्थित थे। मैंने उससे पूछा– क्यों जा आप कौन सी रागमें सिद्धि प्राप्त की है ?

–की है !

गाँव को छोडकर पहाड के बाजू उपवन सभी प्रकारके पुष्प लताओंको सुगन्धी चारों ओर फैल रही थी। उस जंगल के उंचे पेड

आकाश से चुम्बन किया था। आजकल वह दृश्य नहीं। केशरी को छोडकर वन्य प्राणी उपलब्द थे, कोई अंग्रेजी अफसर शिकार खेलने आया तो इसी उपवन में सत्कार किया जाता था। ऐसे अफसर भी आते थे, घर में खाने दाल नहीं, बाहर की आडम्बर बहुत होता था, था नहीं, चाहते थे।

उस समय वसंत ऋतु आने लगी थी। कही कोकिल की आवाज नांदी पाठ कर रहा था। उसी वक्त बासुरी वादन प्रारंभ हुआ। वह दृश्य गाँव की एक छोटी सी मेला हो गया था। खेत से कृषिक आ रहे थे, फिर रात का भोजन करके जानेवाले थे, वे इस दृश्य को देखकर स्थांभित हो गये कि इस उपवनमें किसी को आने की आज्ञा न थी, अब सभी केलिए खुला हुआ था।

रागयुक्त से बजा रहा था, सभीजन अपने विषयों को छोडकर सुन रहे थे। कोई इधर–उधर नहीं देख रहे थे, उनका लक्ष बासुरी पर था। सूर्यास्थ होने में और कुछ समय था, संध्यारंग वा सुखद अनुभव करतो रहा, रागरति में व्य.ति होता रहा। पदं तो याद नहीं उस दिन कौन सी पद को प्रकाश किया। राग तो था वही। राग तुर्या तीन में रहा, आँखें आध बद करके सुनते रहे। अचानक कहीं से सारंग आकर खडा हो गया, उसको किसी का डर न था। सिर को उपर उठकर सुनता रहा, हमें सूचना दे रहा था कि मनुष्य से किसी तरह कम नहीं। राग समाप्ति होते ही सारङ्ग को उसने देखा, आनद में मुझसे पहनाया

गया सोनेके हार को कंठ में डाल दिया। उसी वक्त सारंग अपनी रास्ता देख ली, सभी नाटक फलक मारते ही खतम हो गया। बसुआ से मैंने कहा कि आपने क्या किया ?

मैंने क्या किया !, जो होना था सो हो गया, क्षमा कीजिए जो होता है अपने कर्म से ही होता है, दूसरे से नहीं, इतनी सेवासे संतुष्ट हो जाय, कहते ही उसी पहाड की और सारंगसे दिखाया हुआ रास्ता से दौडना सुरु की सब अकलमंद होकर देखते रहे। कुछ समय के बाद कुछ साथियों को लेकर पहाड म गया तो कही किसी की आवाज न पाया। मैंने भेजने सब कुछ आशा किया था केवल मन का मंदिर हो गया, मेरे चित्र का उलटा बनाया। एक हंसने आकर दूध पीकर चला गया केवल पानी रह गया। सभी चाहते थे यहीं रह जाय।

कला पुरुष, ज्ञानी योगी, किसी का आधीन रहते नहीं।
किन्ही का दास होना वे नही चाहते।

स्वतंत्रतापर अपना जीवन व्यतीत करने यहाँसे निर्मुक्त हो गया दरबार का आते ही उसी घटना को इस गाँव में रहनेवाले कलाकार से चित्र बनवाया। तब से आजतक और किसी में मन न लगता आशा करता हूँ, मरने से पहले फिर एक बार उनका वासुरी दर्शन होऊँ, नित्य निनाद सुन लूं।

* * * * *

इसी आशामें, इस तरह कहते हुए मेरे पिताजी का देहावसान हो गया। अब तक मैंने कहीं न देखा नाम भी न सुना। हर रोज सुहावनीं इस चित्रको देखता रहता हूँ। पाटील ने उस चित्रको एकटक देखता रहा। जब पिताजी ने इस कहानी को मुझे कहा था तब मैं मनमौजी बारह बरसका लडका था। उस समय श्यामका वक्त था।

१४-१२-६४
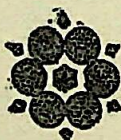
उसने पूछा

उस दिन सोमवार था। धारवाड का बाजार पूर्ण रूपसे खुला हुआ था। व्यापारियों ने व्यापारमें मग्न थे खरीदनेवालों को आकर्षण करने प्रत्यक्ष रंगबिरंग चीजों को रख रहे थे। एक स्थान में तरकारी बेचना जोर था, दूसरे स्थान में मोल लग रहे थे, चाय दूकानों में भारी जमाव हो गया था, मार्गपर बोलनेवाले चिल्ला रहे थे– एक बार खरीदकर देख लो, कभी आय भूलेंगे नहीं। आंग्ल वेषधारी जासूसी, प्रेम कहानी किताब देख रहा था, एक वयोवृद्ध गीता, सिद्धान्त सिखामणिपर हाथ रखा था। ये दोनों

आपस में देखते, मन में हँसते रहे। उस दूकान के बाजू एक ज्योतिषि बैठा था। बोर्ड लगाया था– रमल कहूँगा, हाथ का भविष्य बताऊँगा, परीक्षा कीजिए। यहाँ भी भीड थी, अधिकांश पुरुष को यह मालुम था कि हमारे प्रारब्ध पर जो हो सो हो जाएगा। फिर भी वहाँ बैठकर प्रश्न पूछते, शुक प्रश्न का उत्तर देता था उसको पढ कर बतादेता। अपना वाक्य शक्तिने उसने जीवन निर्वाह चलता रहा। एक रुपया देकर एक लक्ष आमदनी करना चाहते हैं किन्तु अपना लक्ष एक परमात्मामें नहीं रखना चाहते। लक्ष रहे या न रहे, पर एक पुरुषने चार-पांच बरसके बालक को लेकर उसको आगे करते हुए, भगवान के नामपर भिक्षा मांगते जा रहे थे। कोई बालक को देख कर एक पैसा देता, कोई देखते चला जाता। कहीं से पुराना कपडा, कहीं से दाल रोटी मिलता, इसी तरह उदर निर्वाह चलना था। कुमार ने पिता से कभी-२ विचित्र प्रश्न पूछता रहा पिता कुछ न कुछ उत्तर देता था।

एक दिन पिता पुत्र एक घर के सामने बैठकर रोटी खा रहे थे। उस समय सामने घर के एक युवा पुरुषने किसी कारण वश वृद्ध पिताजी को शिर पर हाथ रखते बाहर निकाल रहा था। उसको देखकर ६-७ वर्ष के कुमारने पितासे कहा कि ये क्या हो रहा है? पिताने उत्तर दिया– युवा पुरुष अब घरका अधिकारी है, अधिकार का उपयोग चला रहा है। बालक चुप्र के से रोटी खाता रहा। पिताजी और दो तीन कौर खाकर पुत्रसे उसने पूछा–

क्या तेरा अधिकारमें तू मेरा पालन करेगा ?

उसने मौनसे उसे देखता रहा।

* * * * *

में श्रावण मासमें सिद्धाश्रम को गया था। वहाँ सम्यक् ज्ञानियों का समूह था। उपासना, भक्ति, ज्ञानपर प्रवचन चल रहा था। अन्तिम श्री प्रभानदजी ज्ञानपर घोषणा कर रहे थे। "प्रियोही ज्ञानिनो" वाक्य को सामने रखकर ज्ञान का स्वरुप श्रुतियुक्ति अनुभवसे बता रहे थे। चार पुरुषों भगवान को याद करते हैं उनमें ज्ञानी मात्र भगवानसे निकट संबंध हैं। ज्ञानी निर्लेप, नित्ययुक्त कमलपत्रके समान हैं। सूर्यपान पुष्प सदैव सूर्य को ओर रहता हैं, उस तरह पार्थ था इसलिए भगवान ने धर्म भीम को छोडकर नर को गीताज्ञान का स्वाद पिलाया। आत्म ज्ञानके बिना विश्व में और साधन नहीं हैं। कपूर से बनाया हुआ स्त्री अग्नि पुरुष से जिस प्रकार एकाकार हो जाती है, उसी तरह जीव रुपी स्त्री पुरुष रुप परमात्मा में मिलनेसे एक रस हो जाते हैं। एक ब्रह्मके बिना और कुछ नहीं हैं, जिसकी ज्ञानामृत पाना हो, स्त्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ट के पास जाना चाहिए। मानवत्व को छोडकर जाने से वह समझमें आता है. संयोग में जो सुख मिलता हैं, उस वक्त न स्त्री रुप है, न पुरुष, उसी प्रकार ज्ञानानन्द में कोई भेद नहीं है। उत्तमाधिकारीने उसको पाना हैं। अधिकारी में उत्तम, मध्यम, कनिष्ट तीन प्रकार के हैं। उत्तम मधुमक्खिके

के समान है, मध्यम मक्खी के समान है यह एक पल मीठेपर, एक पल मलपर बैठता है, कनिष्टाधिकारिने सदैव क्रिमीके समान होता है। क्रिमि जिससे उदय होता है उसीमें मर जाता है, इसी तरह पुरुष ने विषय में ही रह कर विषय में ही मरजाता है। ज्ञानी इनसे परे हैं।

इनका श्रुतिगम्य उपदेश सबसे अधिक प्रभावित होते श्रोतृ वर्गों पर एक प्रकार की प्रभुत्व आ पडा था। कोई प्रत्यक्ष आते इनसे प्रश्न नहीं पूछता था, अप्रत्यक्ष दिशा में कोई शंका किसी से आये तो लेखन द्वारा प्रबोधमें प्रकाशित करके निवारण करते थे। उन शंकाओं को समाधान प्रमाणित सूत्रों से युक्त परिहार कर देते। उनका वाम आँख के उपर जो गहरा निशान था उसको मैंने अचानक एक बार देखते मैंने पूछा–

यह निशान किससे हुआ है ?

निशान अभ्यास का है !

अभ्यासका ?

हाँ !

कैसे ?

ऐसे !

एक बहुत विशाल ताडी वृक्षोंका समूह था। यहाँ वहाँ कुटीर देखने मिलते थे। मंदमंद पवन पत्ते भर रहा था,

पक्षियों की आवाज दिन रात भर चलता रहा, एक नाला सदैव बह रहा था। इसके नजदीक एक आश्रम था। वहाँ एक ज्ञाननिष्ट पंडित का निवास था। नाम था शेषानंद।

पूर्व में बंगल देश के रहनेवाले थे। प्रवास करते करते कर्नाटक में आकर मलेनाड में कुटीर बनाया था। शास्त्रबोधमें विश्वांस था। शंकरभाष्य गीता पूर्ण रुपसे ज्ञापक था। उनका गीता प्रवचन सुनने लोग आते थे। कभी-२ वृत्त तुर्यावस्थामें रहता था। एक बार काशी विद्याभ्यासियों ने इनके पास आते गीतापर विचार कर रहे थे। वहाँ एक श्लोक भाष्यपर भी भार्थ हुआ। तब शेषानंद ने वही माना। विद्यार्थियों न प्रकाशित ग्रंथ के आधारपर बोल रहे थे। आनंद ने अनुभवपर। वह कसौटिपर उतर गया। जब श्रृंगेरी मठ को जाकर मूल शंकर गीता भाष्य देखने से आनंद का वाद ही सिद्ध हुआ।

आनंदमें तल्लीन रहते हुए, किसीके आधीन न थे। आश्रम में हर रोज गीता प्रवचन चल रहा था। वह मेरे निमित्त। बोध मेरे विचार से नहीं चलन केवल उन से विचार बन्। जा विषय में सुन लेता, जब वे प्रश्न करते तब उत्तर दिया तो ठीक होता, नहीं तो लाठी पाठ पर से चल जाती थी। ऐसी घटनायें बहुत बार हो चुकी थीं। इस व्यवहार में भी मुझपर पुत्र जैसे लाड थे। स्नान के लिए पानी लाना, कपडा धोना, रसोई बनाना, इत्यादि चतुर्विद सेवा मुझसे चल रहा था। यह सेवा दस ग्यारह बजेतक किया जाता था। दुपहरमें विश्रान्ति लेते जब मैं

बाहर खेलने जाता था। एक सखीसे मित्रता बन गई थी, नाम गौरी था। विश्रांति के समय दोनों मिलकर खेलते थे, वय ९-१० बरस की थी। हम दोनों में अन्तर चार-बरस रहा होगा। गुरुजी को रसोई बनाते समय वह भी आती थी, कुछ सहायता करती थी। एक दो बरस तक इसी तरह मित्रता रही।

गौरी के पिता खेतमें काम करता था, माता बाल्यमें मर चुकी थी, नानी ने उसे पालन पोषण किया। नानी ने जब मुझे देखती है गौरी से बता देती- गौरी! वह आ गया!! सुनते झटसे आकर मिलती। नानी शेषानन्द के पास जब कभी आती थी, नमस्कार करके चली जाती थी। उसे सत्तर बरस आयु हुई होगी। मुझका गौरी पर आनंद का प्यार था। जब गुरुजी ने गीता बोध करते थे तब वे दोनों कभी उपस्थित रहते थ। प्रथम मुझे गीता कुछ न समझा, गुरुजी देखकर सरस्वति उपासना करवाया। तब वह बोध पूर्ण छाया हृदय में निज अनुभूति में अंकित होता गया। गीता पूर्ण पाठन होकर ब्रह्मसूत्र प्रारंभ हुआ। पूर्ण अध्यासके विषय लेकर प्रारंभ हुआ।

पीछे देखा हुआ वस्तु दूसरे में स्मृति रुपमें आकर जो आभास होता है उसे अध्यास कहते हैं। जिस के आधार से सर्व प्रपन्च को देखता हूँ, उसपर ही आभास करके बैठता है। उस अध्यास निवारणार्थ सर्व वेदान्त ग्रंथ बोध कर रहे हैं।

वह अता तो ब्रम्ह जिज्ञासा से प्रारंभ होकर अनावृत्ति शब्दाद् तक हुआ ।

* * * * * ५

शेषानंदजीने उस दिन प्रात: बाहर गये थे, ऐसा लगा कि वे दुपहर को नहीं आयेंगे। एसी निश्चय करके गौरी के साथ तटनो तटपर गये थे। सब कपडे धोने लाया था, वह भी लाई थी। कपडों को धोने के बाद सुखाने के वास्ते, रेतपर अलग-२ बिछा दिया। दोनों मिलते बहुत समय तक रेतपर खलते रहें। रेतार घर बनवाया नजदीक एक कुँआ तैयार किया. मैंने गौरी से पूछा यह क्या है ?

यह घर है, यह कुँआ है।

गौरीने प्रोत्साह में भुजपर हाथ रखते प्रश्न किया– प्रभा आगे ऐसे घर बनाकर जीवन व्यतीत करना है ? वहाँ तेरे अधिकारमें तू मेरा पालन करेगा ? बताई त मुझे खुशी होगी

मैंने मौन धारण किया था। तब–

....

बताओं न ? एसे चुप रहने से मुझे दुःख होगा।

....

मेरे रौनकपर वह मुग्ध हो गई थी, उत्तर पतिक्षा में आसक्त थी। मैंने कह दिया ये सभी अध्यास है।

अध्यास ?

हाँ !
कैसे ?
ऐसे ?

ऐसे !! कहकर रेत घर को गिराकर, उठना चाहता था उसी समय गुरुजीने हमारी तरफ आ रहे थे। गुरुजी को देखकर आँखें चुराली गई। मेरे पाँव में कपन सुरु हुआ था। नालेपर आकर २-३ घंटे बीत चुके थे। हम दोनों उठकर कपडे एकत्र बनाते राह देखनेवाले थे, उतने में ही गुरुजीका गर्जन हुआ--

कब आये ? बातचीत खतम हुआ ? गौरी ! पहले जैसे साथ में आकर देर तक बैठना, अच्छा नहीं, अब तू बडी हुई है।

तीनों मिलकर आश्रम की ओर दौरान किया। गौरी अपनी कुटीर की ओर सिर नीचा करके चली गई। तब तक बारह बज चुके थे। गुरुजी को चपाती बनाना सुरु किया जा रहा था, गुरुजी अंदर आ गये देखने में बहुत मधुपान किया था, जोरसे पुकार दिया--

प्रभानंद !!
जी !

तू किसके लिए आया है। मालूम है ? इस बार क्षमा करूँगा, दुबारा यह घटना पाया तो सिर चूर २ कर दूगाँ। कहते बाहर चले गये। एक घंटे के बाद गुरुजीको भोजन करवाया, वे

विश्रान्ति लेने चले गये। इस बार मैं बच गया, उस दिनसे गौरी आश्रम की ओर आना बद की, नानी आती जाती थी, उससे मालुम हुआ की आना चाहती है परन्तु गुरुजी के भयसे छोडदी है।

सुबह का पाठ समाप्त हुआ, तब गुरुजीने बताया कि मुझे कल शिवपुर को जाना है, वहाँ कार्यक्रम है। हाँ! याद रखना तुमको आगे घर बनाना कूप खोदकर पानी प्रकाशित करना नहीं है- ज्ञान प्रकाश करना है स्वयं पुरुषोत्तम होकर, मुमुक्षाओं को निज मानस पानी पिलाना है-।

सुबह होते ही गुरुजीका प्रस्थान हुआ। जाते समय कुछ न कहाँ। इसी प्रस्ताव को लेकर गौरी प्रस्तुत हो गई। मेरे लिए रसोई बनना था, वह भी कार्य में साथ बन गई। उसमें विचित्र परिवर्तन हो गया था। नये २ विचारों का सामने रख देती, मैं केवल हाँकहकर उस बात को ताड लेता। मुझे वह सब याद नहीं, उस वक्त जो बातचीत बन गया था। दूसरे दिन नाले का पानी लेते जाते समय गौरी ने एक कुँभ लेकर आ गई नालेमें पानी भर देने के बाद फिर वही बात दुहराने के लिए। उसने पूछा-

अध्यास क्या है ?

मुझको लेकर जो आपने भावी कल्पना की है, वही है। तुमने युगल जीवों के जो खेल देखा है, उस खेल को यहाँ मानस चित्र बनाया है वही अध्यास है। जो स्वयं नहीं, सो स्वयं समझकर बैठना अध्यास है।

यह सुनते उसका मुंड पीला पड गया, वाणी कुंठित हो गयी। कुछ न बोली, धीरे पीछे से आ रही थी, आश्रम को आते देखता हूँ गुरुजी द्वारपर ठहरे थे, उन्हे देखते अंदर चला गया। स्नानको पानी गरम करना सुरु किया था, गुरुजी की आज्ञासे भोजन सिद्ध करने के साहित्य इक्कट्टा करना सुरु किया। हृदय हाथ, पाँव थर्रा जा रहे थे। उसी अवस्थामें चपाती बनाया। गुरुजी स्नान करने के बाद भोजने को उपस्थित हुआ। भोजन पात्रमें चपाती डाल दिया, दूध में मिलाते एक कौर मुँहमें रखकर, एक पल के बाद, उस कौर को बाहर थूका हाथमें लौटा लेकर मेरी ओर क्रोध से फेंक दिया, बाद बाहर चलेगये वामनेत्रके उपर गहरी चोट लगी, खून बह रहा था हाथ को उस स्थान पर रखते हुए धीरे से रो रहा था। वाम भाग का कुर्ता लाल रंग से भरा था।

गुरु बहुत पछताये, मनही मन व्याकुल ही रहे थे। मुझे बाहर बुलाया, अपने पास बिठाकर मेरे सिर को अपनी जाघ पर रखते अश्रु वहाये। प्रभानन्द ऐसा क्यों किया ? प्रथम तुझे बताया था की नहीं ? और फिर अपराध किया। अग्नि के पास घृतकुम्भ नहीं रखना है। विराग आश्रम में इस तरह साथ रहना अपवाद होता है। आश्रम को कलन्क आता है। आज से जब कभी ऐसा व्यवहार नहीं करना, सुन लिया यही मेरा अन्तिम उपदेश हैं। तुम्हारे गुरुजी आपको बुलाये, हैं,एक महिने के बाद जाना है। अदर चलो, विश्रान्ति लेना कहते मौन हो गये।

नाद तो लुप्त हो गया था, बिन्दु प्रकट होकर प्रशान्त हो रहा था। ८-१० दिन में वह चोट गुणमुक्त हो गया पर कला निरन्तर रह गई। कलेजा टण्डा हो गया था, क्यों कि गुप्तमाया का परदा फट गया था, किसी तरह हल चल नहीं था।

प्रयाण का दिन निश्चय हुआ। यह समाचार गौरी को मालुम था। नानी को साथ लेकर अन्तिम दर्शन लेने आयी थीं, बोलना चाहती, प्रयत्न करने पर वह सफल नहीं हुआ। अब उसने विरह वेदना से पीडित हो रही थी, दुःख का वेग बाहर आने को प्रयत्न कर रहा था, उसने गुरुजी के सामने उदय करना नहीं चाहती थी। जब उसने मुझे चोट लगने का समाचार पाया तो दो तीन दिन तक नियमित रुपसे खाना पीना तक छोड दी था। ललाटपर उस गहरे निशान को देखते ही दोबून्द अश्रु आँखों में चमक रहे थे मुझे अन्तिम नमस्कार करते समय मेरे दोनों पाँव पर टपक पडा। उन अश्रुधारओं ने मुझसे पूछ-

वहाँ तेरे अधिकार में मेरा पालन करेगा ?

मैंने मौन से उसे देखता रहा।

* * * * *

गुरुजीके साथ मठ को आने के बाद मठ का अधिकार दिया गया। श्री शिवयोगी गुरु महाराजने अधिकार देते समय बंधुत्व मोह को त्याग देने का तर्पण छोडने को बताया, उसके अनुसार तर्पण छोडना पडा। दो दिन के बाद श्री शेवानन्द

गुरुजी का निर्वाण हो गया, उससे दिया गया नाद बिंदु कला तीन का वह ज्ञान विराजमान है।

मेरी आयु ७-८ बरसमें होते समय मेरे पिताजी यहां छोड़कर गये थे। श्री शिवयोगी महर्षि ने अध्ययन के लिए (सात-आठ बरसमें) बेंगलूर उसके बाद गीतादिज्ञान के लिए श्री शेषानन्द के पास भेजा दिया गया। उस प्रसंग का हो है यह निज विजय निशान।

मैं कभी २ श्री प्रभानन्द स्वामी मठको जाया करता था। गीता के बारे में विचार विनिमय करते रहे। एक दिन श्याम के पान्च बज के थे। फटी हुई गदा घता, कुर्ता धारण किया हुआ एक साठ बरस के वृद्ध आते ही श्री ने उसे एक टक से देख रहे थे। वह आते ही स्वामी को नमस्कार करके उसने पूछा-

तेरे अधिकार में तुम मेरा पालन करोगे ?

उसने मौन से उसका देखता रहा।

* * * * * *

उस समयमें उपस्थित गण को क्या मालुम था कि वे वृद्ध प्रभानन्द स्वामी के पिता हैं।

उस वक्त में उपास्थित न था, इन दोनों की तरफ दृष्टि डालकर श्री शिवयोगी महाराज के शिलामूर्ति की तरफ मंडलिया

●

१९-७-६५

विस्मृति

सूर्यास्त का समय था पहाडों से प्राणी पेटभर खा... कृष्णा नदी का पानी पीकर अपने निवास स्थान पाने की ओर जा रहे थे। कोई निवास छोडकर प्रीतम के साथ पहाड की ओर जा रही थी, गुनगुनाते बच्चे साथ थे। एक बच्ची माँ पर आरुढ थी, माँ का मंगलसूत्र पकडा था। मौन से बता रही थी कि-यही संसार का निरन्तर सूत्र है, जिसने इसको सत्य रुपसे मान्यता दी है, वही इस संसार से पार हो जाता है। उन्हें किन्ही का बाधा नहीं होता। जिस पुरुष से यह सूत्र धारण किया गया है, एक सूत्रपर या उपसूत्र पर रहना उनपर ही निर्भर है। विस्वमें बहुत चिज

मिलते हैं, उनपर किसीन किसी का अधिकार रहता है। जिसका अधिकार हो वही उपभोग करने श्रुतियों से बोध है, उसको पारकर जो उल्लंघन करता है उसे यहाँ रहने को एक पल भी स्थान नहीं।

चांदनी रात थी, शीतल हवा वह रही थी, खेतों में कृषिकों से मृदङ्ग की आवाज आ रही थी, एक भोजन कर रहा था, दूसरा पीता रहा। रामानंद बताया कि पीना अच्छा नहीं। इस विषयसे ही संभाजीने राज्य खोकर बंदी हो गया, यदि न पीकर पिता के जैसे राज्य किया तो यवन का घमण्ड और भी पानी में मिल जाता था। पृथ्विराज स्त्र में आसक्त होकर रहने का फल ही यवनोंका अधिकार हिन्दु पर दिर्घावधि तक हुआ। यदुकुल भी समुद्रतट पर अति पीने से मन्दोमत्त होकर आपस में लडाई करके समाप्त हो गये, विचार करके देखा परन्तु मेरे विचारसे पीना समाज व देश के अभिवृद्धि में बाधक है। इसी वक्त एक आते कहता रहा-- यह बहुत ताजा है, अभी लेकर आया हूँ। इसमें स्वामीजी को अर्पण करके इधर लाया हूँ श्री न खूब परमाईस किया, लीजिए, थोडा लेने से सिर भाग जाएगा, इसके प्रति अब पैसा नही देना, आगे धान्य ले जाऊँगा।

श्याम ने ले लिया, साथ बिना रखने समाप्त करते विश्राम लिया। रामानन्द का बोध हवामें उड गया। विमनस्क बनक अपने खेतमे जाकर रातभर पहरा करता रहा, इधर श्याम आनंद में सो गया था, उसको यह मालुम नही था कि रातभर सिद्ध फसल को ध्वसकर चला गया है।

सुबह के सात बज चुके थे। कोई स्नान करके मंदिर की तरफ कोई अपनी दैनंदिन काय की ओर जा रहे थे। समाज म सभी एक भाव के नही रहते। एक सात्विक है तो दूसरा राजस या तामस। निज भाव होता है केवल सात्विक में। नरसखने बताया है– सत्वात् सजायते ज्ञानम्। प्राचीन कथाओं को देखन से यह विदित होता है कि सभी सत्वांश में ही अपना आत्मज्ञान पाकर मुक्त हो गये। सात्विक पुरुषों का कर्तव्य है केवल समाचार, उपदेश देना, उसी तरह स्वयं चलते दिखाना है। सात्विक का वेष धारण करके सत्र बोध करते रहते से, वह फल नहीं देता। स्वयं विषय करते हुए श्रोत्रुओं को विषय न करन को निर्देशन करना यह उचित नहीं है। जहाँ तहाँ देखा जाता है कि दिनभर महान पुरुषों के पास रहना रात में चोरी, गबन कर के उदय के पूर्व ही अपने स्थान पर उपस्थित हो जाते हैं। उनमें कुछ लोग जाते थे जहाँ स्वामी के नाम से प्रख्यात है तथा सदैव शक्ति पूजामें विरत हैं।

एक छोटा सा गाँव है, सभी वर्ण के पुरुष है। अपने अपने उद्योग पर निर्भर है, श्याम होते ही शराब तथा ताडी दूकान पर जाकर, कुछ लोग पीते है कुछ पीनेवालों को देखते चले जाते है। इन दोनों में दुषण चलता रहता है। पीनेवाले उस शिवस्वामी के पास जाते रहते है। स्व मीने उनका न बुलाता है तो भी वे उनसे डरकर जाता है। शराब या ताडी संसार म प्रगति होने का एक श्याप रुप है। उसमें घर, जमीन, मान,

खो जाएगा। माँ का घर छोडकर जिस पुरुषके आश्रयपर आई है उसने उनके नामपर दिनभर रोना है। वह समझा है–

वह मेरा भोग का वस्तु है, मन जब चाहे तब उससे आनंद को प्राप्त करके फिर जाना है।

घर आकर कभी २ पूछता है, खाना बनाया है? क्यों नहीं? तुझे मालुम नहीं कि, भोजन करने आता हूँ। इतना हा घोषणा करके बाहर चले जाय तो उस स्त्री का सुदैव समझना चाहिए। नहीं तो एक बार स्वर्ग को जाकर लौट आती है। उसने कभी नहीं पूछता कि घरमें क्या है, क्या लाना है? फिर यही पूछता है उस स्वामी के पास ताडी लाऊँ? या शराब?

शिवस्वामी प्रापन्चिक है। गंगाधर एक बडे भाई है। स्वामी की सात्विक मूर्ति अन्नपुर्णा है पति कैसे भी रहने दो उसने उनपर रुष्ट नही होती। उनको चिंता यही रहती है कि पति कब भोजन करेंगे? शिवस्वामी युवावस्थामें था। सदैव उसने शक्ति पात्र को धारण करता था। जो कुछ मांगते थे,लोग रखते थे, सदैव सन्निधानमें रहते थे। उनका मठ कृष्णा तटपर है। अपने शिष्य गणों का लेकर सुरपुर से कोल्हापूर तक सोलापूर से शिवपूर तक प्रयाण करते थे। किसीने उसका विरोध न किया, सभी उसका अभिवादन करते थे। जहाँ जाता है वहाँ प्रथम ताडी कुंभ तथा शराब रखना पडता था। बहुत पीते थे, उनका पीना देखकर एक पुरुषने परीक्षा करना चाहा, उसी

तरह शराब को सामनें रख लिया, बीस पच्चीस पुरुषोंने पीने का जो शराब था, उसने अकेला ही पीकर समाप्त किया। उस अवस्था में बहुत गंभीर हो गया था, पेट में जल रहा था। जलने वाली आँखें युक्त उन्हें शाप दिया, बताया जाता है कि उसने स्वामी के शाप के प्रकार पेट जलते मरगया।

३

पीना सुरु किया तो वह दो तीन दिन तक चलता रहा। अन्य विषय पुरुष विराजमान थे, कोई मुफ्त मिलने के कारण, कोई अन्य विचारों से। अधिक निशामें एक बडबडाता रहा, अन्य लोट रहे थे। शीलता का अतिक्रमण होता रहा उस निशा परिषद् में, वनिता गमन निषेध था। अस्तु।

प्रति माघ मास में महोत्सव चलता रहा था। दस पन्द्रह हजार तक जात्रा लोग मिलते थे, बिना माँगने से ही दस बारह हजार भिक्षा मिलती थी। जात्रा में एक दिन सार्वजनिक अन्नदान चलता था, इस दिन को छोडकर उस स्थान में अन्न एक कौर भी नहीं मिलता था।

एक समय स्वामीने अपने मठमें विराजमान थे। साथ शिष्यगण उपस्थित थे, मद्यमें मधु का कुंभ रसपान चल रहा था। मठके सामने से एक राजमार्ग था, उस रास्ते से बहुत राहगार जाते थे। आस्वान मासमें इस मार्ग से ही मडिवाल स्वामी जा रहे थे। ७० वर्ष के यह भी सिद्ध पुरुष थे, दासोह मठ था,

प्रवास करते २ रहते थे भिक्ष माँगकर मठ को भेज देते थे। इनके आशीर्वाद से मुधोल के महाराजका महात्रृण गुण मुख हुआ था। इसका प्रतिरुप में महाराजने जमीन देना निर्णय किया था, मडिवाल स्वामीने अस्वीकार किया।

एक स्वेत घाडेपर आरुढ होते तीन चार सेवकों के साथ शिवस्वामी मठ के सामने से होकर आगे जा रहे थे। उनका बाँकिया आवाज सुनकर शिवस्वामी ने अपने शिष्य को उन व्यक्तियों को बुला लेने आज्ञा दिया। एक उन्मत्त पुरुषने जाते मडिवाल स्वामीजी के सामने खडे होकर आगे जाने के लिया रोक लिया, और मठ को आने को कहा।

क्यों ?

शिवस्वामी बुलाऽऽ रहा ऽऽ हूं ऽ।

मुझ से क्या होना है ?

मुझे ऽऽ मालूम नहीं !

उस पुरुष का लक्षण देखकर अपने शिष्य गण युक्त गये। अन्दर जाकर देखते हैं, सुरापान चल रहा था। देखकर मन को दुःख हुआ। एक पुरुषने बैठने स्थान दिया। शिवस्वामी के हाथ में पान पात्र था। मडिवाल स्वामो से कहा–

कहाँ के रहनेवाले हैं ?

मरेपुर का !

अच्छा, इसको ले लो,

स्वामीजी ! यह मेरे योग्य नहीं, उसके योग्य मैं नहीं हूँ। यह मेरा सांप्रदाय नहीं।

अच्छा ! आपके योग्य, आपके सांप्रदाय के अनुसार बनाकर पी लो। मडिवाल स्वामी ने उस पत्रको लेकर अपने वाम हस्त पर रखते उस पान पात्रीयपर एक वस्त्र डालकर अपना गुरु स्मरण करके, फिर देखने से वह एक प्रकार की लस्सी बन गई थी। उसको पूर्ण पीकर स्वच्छ करके शिवको दिया। इस परिवर्तन घटना को देखकर शिवस्वामीजी का अभिमान चूर चूर हो गया, नतमस्तक करना पडा, क्षमा याचना की। तब यति ने उपदेश किया–

जिस शक्ति तत्व को आप ग्रहण करके जो करामात कर रहे हैं, उसका अंत व्यभिचारमें परिणत हो जाएगा। आज तक जो आपने बहुत घटना प्रकाशित किया, ये सब आग नहीं चलेगा। आजकल दुनिया बहुत विचित्र है, सूक्ष्म से चलना है। जो सुरा चाहता है, उस शक्ति वर्धक आहार चाहिए, शक्तिवर्धक होने के बाद किसी पुरुष का इंद्रिय निग्रह करना कठिन होता है, एक से तृप्ति नहीं होता, अनेक से मिलना मन चाहता है। सत्व पुरुष बनो, उससे पुरुषोत्तम से दर्शन होता है। अच्छा यह तो बताईए कि देविने मधुपान करके दैत्यों का संहार किया, आप सुरापान करके क्या किया ? देवीने जो पान किया है वह अमृत है, आपने सुरापान छोडकर ज्ञानामृत का धारण किया तो दैत्य रूपी

गुणों से मुक्त हो जाते हैं। कहकर इसके बाद अपने मार्ग से रवाना हो गये।

ये सब सुनते समय सिर झुक गया था। मन में ही तप तपा रहा था। उनके शिष्यगण देख रहे थे। उन्हें आश्चर्य हुआ कि मेरा गुरु कभी किसी के सामने नतमस्तक नहीं हुआ था। अजेय होकर आये थे। परन्तु उसका पलटा हुआ। यह विचार करते अपने घर चले गये, श्री शिवस्वामी विश्राम ले लिया। कुछ मास तक पीना छोड दिया। शिवधर्म पारायण में निरत रहा। यह देखकर अन्नपूर्णा को बहुत सन्तोष हुआ। पति की यह रीति देखकर कलेजेसे लगा लिया।

इन दोनों स्वामियों में एक वयोवृद्ध तपस्वी, विनय संपन्न गुणों से युक्त थे, दूसरा अभिमान युक्त गुणों से। एक से अन्नदान चलता रहा, एक से सुरादान। इस प्रकार गंगाधरकी पत्नि गंगा तुलना कर रही थी। अन्नपूर्णा, व गंगा दोनो एक तन के दो हाथ थे।

४

फिर माघ मास आया। ऋतु के अनुसार खेतों में कार्य चल रहा था। बबलाद के श्री शिवस्वामी मठ का मेला होने का समाचार चारों ओर व्यापक था। सभी इस यात्रा को आने की राह देख रहे थे। खेत की फसलों को तीव्र से इकट्ठा करने तल्लीन हो गये। किसीने गाय, भैंस, किसीने जवान बैल, बछड़े

का यात्रामें त्रेचना विचार कर रहे थे। शक्ति प्रदर्शन में जो प्रथम आता था, उसे सोने का पदक दिया जाता था।

इस पुरस्कार केलिए उस मालिक से कुछ अकृत्य हो जाता था। वह कृत्य इस मानवको ही विरोधता है। पशु जीवको वाणी है नहीं, फिर भी वह सात्विकाहारी है। परोपकार कर्म में निरत है। अपने जीवन को पार कर लेता है। त भी यह पुरुष वह मर जाने के वाद उसका मांसतक नहीं छोडता। ऐसा है मनुष्य की मानवता।

माघ मास पूर्ति होने में दो दिन बाकी थे। मठ में जात्रादि सिगांर कर रहे थे, पुरुषों का आना जाना सुरु हुआ था। जात्रामें व्यवस्था के लिए पोलीस ठाना को पार्टि भेजने की निमित्त ज्ञापन पत्र भेज दिया। उसके अनुसार वे भी आ गये, उनको एक प्रत्येक स्थान दिया गया।

शरीर को ही दार्शनिक पुरुषने रथ मान लिया है। उन्होंने रथ का क्रियासिद्ध बनाया, सुवर्ण कलशसे युक्त वह शोभित दे रहा था। भक्ति उस देखकर आनन्द विभार गये। रथमें भूनि का रखते हुए नाना वाद्यसमूहसे, शिवघोषणा से वह रथमेला समाप्त हो गया। दूसरे दिन अन्य कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। पशुओंका प्रदर्शन, शक्ति प्रदशन किया गया। एक पुरुषने अपने शान्त शाली बैलका प्रदर्शन के पूर्व काफी तेज शराब पिलाया था, इसके कारण वह अचेतना रुपमें उस महान पत्थर को खींचने

के बीचमें उसकी गुदा से खून निकल गया, अखिर हार खाना पडा। आगे समाजार मिला कि उस गुदा से खर्च निकलने का कारण ही मृत्यु हुई।

पशुओं को खरीदना बेचना, मीठा पदार्थ लेना, इत्यादि क्रिया को संपन्न करके श्री शिवस्वामी से आर्शावाद लेते जा रहे थे। आशार्वाद रुपमें प्रसाद फल पुष्प इत्यादि मिलते थे। इन चोजों से व्यवस्था पुरुषों को तृप्ति नहीं हुई। इनको श्री लक्ष्मी से सम्पन्न करके विदा किया गया। एक पुरुषने एक पोलीस से हास्त का फूल उडा दिया—

हम सब श्री शिवस्वामी को छोडकर आपको ही गुरु मानेंगे क्योंकि सर्वगण शिवस्वामी का धन अर्पण करते हैं वह धन आपको उनसे आशिर्वाद से मिलता हैं।

तीसरे दिन मठकी सफाई को गयी अधिकांश लोग चले गये थे, केवल वे थे जो प्रत्येक स्वामीसे आशीर्वाद लेते जाने इच्छोक हैं। उनमें एकने स्वामीसे बताया— मैंने इसको स्वयं बनाकर लाया हूँ। खजूर, शक्कर, द्राक्षी से बनाया गया रस है। इसको आप स्वीकार करके देने की कृपा किया तो हम कृतार्थ हो जाएंगे।

फिर वासना प्रज्वलित होने लगी। चार महिने तक वह सुप्तावस्था में थी, अब वह धारा प्रवाहित हो गई। वेग नहीं

रुका, वहाँ रुकावट करनेवाला कोई नहीं था। उस महान पुरुष का बोध उसने चौपट कर दिया। द्रवरुपको छाती से लगा लिया। फिर प्रारंभ हुआ वही राग, वही याग।

बीज दशामे हृदय भूमिमें अतर्गत था वह उस दिन भूमि छोडकर संजनित हुआ, अनुवाद- प्रतिवाद अगल बगल में प्रारंभ हो गया, यह समाचार चारों दिशाओं में प्रकाशित हुआ। वही क्रिया, वही क्रम दैनिक से अमोघ दिशामें उपक्रम से चल रहा था। उस कार्य में किन्हीका बाधा पंद्रह बीस बरसतक नहीं हुआ। अन्नपूर्णा को विश्वास था कि किसी न किसी दिन इस प्रकार उल्लन्घन कर देंगे।

५

हठात समाचार सारे प्रदेश में व्यापक हो गया कि श्री शिव-स्वामीजी का देहावसान हो गया। यह पर्यावसान किस प्रकार हुआ किसी को न मालुम था।

६

रात के बारह बज चुके थे, दिनभर खूब गो चुके थे, यहाँ तक स्मृति नहीं थी कि यह मेरा है या पराया। उसी दिशामे विकार होते हुये, शयन करने अपना कमरा छोडकर, दूसरे स्थान में गया था। वहाँ गंगा अकेली सो गई थी। अन्नपूर्णा को ही समझकर गंगा का तन जब मुष्टिमें बांध लिया तभी गंगाने झटसे उठकर जोर से बताया-

अन्नपूर्णी बाएँ कमरे में सो गई है. मैं गंगा हूँ। सुनते इस आघातसे पाँव उलटा रख रहा था, गंगाने फिर कहा- अजो! जरा सुन, कुछ न समझाना, बढे भाई की पत्नी माँ सदृष्य है। भूखसे आप दूध पीनें माँ कुच को स्पर्श किया हैं, समझा-

निशा परदा फट गई। विस्मृति स्मृति चित्रमें बदल गया। विषय विलास माधुरी प्रायश्चित के रुपमें परिवर्तन हुआ।

६-७-६५

दस हजार तक लोग बैठे थे, आश्रम के प्राकांगणमे प्रचण्ड सभा चल रही थी। कई वैराग्यशाली अधिकारियों ने अपने २ पीठपर आसीन थे, वातावरण शान्त था, क्रमसे मनुष्यत्व, भक्तिपर जोर देकर कहते थे।

“मनुष्य उन्नत होने को धर्म से अवलंबन करना चाहिए। किंतु वह सत्कर्मसे युक्त हो। विभिन्न सांप्रदायमें अलग २ धर्म लक्षण प्रकटित हैं। मुक्त होने को जो साधन किया जाता हैं, वही धर्म कृति हैं। स्त्री धर्म हैं पतिव्रता के साथ रहना, शिष्य का धर्म है

गुरुजी की आज्ञा पालन करना। जो धर्मसे विमुक्त होता है, वह बिना आधार के लता बन जाता है। प्राचीन महर्षियों में अभ्युदय के व्यवहार को, बाह्य वृत्तिको अन्तरवृत्ति पर लाना, शभ गमन करने यज्ञ यागादि करना, अन्तःकरण की शुद्धी के लिए जो जपतपादि हैं, सदाचार, दया, नीति और उचित विचार इत्यादि विभागोंको धर्म कहे गये हैं। पुराणमें परोपकार परमधर्म माना गया है। बुद्धने धर्म का मूल दया माना है। इसीलिए जो धर्म को छोडकर जाता है, वह मनुष्यत्व से भ्रष्ट होगा। जब तक आप लोग धर्म नियमसे बाहर नहीं होते तब तक आप उन्नत सुखानंदमें रहते हैं। जिस पुरुषने उलटा रूप धारण करता है पतन होता है। विषय विलास से मुक्त होकर स्वरुप सुखमें जो रत रहता है, उसका जीवन समाप्ति तक प्रकाशमान व निर्मुक्त होता है।

इन यतियों के मध्य पीठसे उठते हुए पचीस वर्ष आयुके प्रमुदित आश्रम यतिने उठकर आचार पर जोर लगाते कहा— "आचार पुरुषको उपर ले जाता है, नीतिमार्ग को छोडकर जो चलता है उसको समाजमें अमर्यादा होता है। जीवनमें शुद्ध शीलता को छोडकर भ्रष्ट कोई नहीं है, आचारमें कठिनता आती रहता है इसका अंतिम फल अजय है। इसलिए पूर्व आचारों ने जो नियम रखकर गये हैं उनपर विस्वास करके हम तुम चलना चाहिए। स्वयं आचार्ययुक्त होकर रहते हुए, अन्य पुरुषको जो बोध करता रहता है वहीं आचार्य या गुरु है।

गया। आश्रम में नित्य पथिक को पसाद मिलाता था। दूर २ से महात्माओं ने इनको आमन्त्रण करके सन्मान पत्र देकर भेज देते थे। इस प्रकार आगे आठ-दस वर्ष प्रभाव प्रकाशित होता रहा। भक्तवृन्द सदैव आश्रममें विराजमान रहते, तथा अपने दुःखको बता देते, जो आशोर्वाद मिलता उसको लेकर घर जाते थे। उन लोगों की श्रद्धा तथा श्री यति के अचलवृत्ति इन दिनों में अपने मनके अनुसार पुष्प-फल होते जा रहे थे।

२

श्री सिद्धाश्रम सकलवृक्ष पक्षियों का समूह निनाद, मन्द मन्द पवन, मीठापानी, गाँव से एक कोसपर रहने से शान्त वातावरण रहने के कारण नया पुरुष यहाँ बिना आते अपना गाँव नहीं जाता था। राजयोगि सिद्ध पुरुष की समाधि रहने के कारण उस आश्रम को श्री सिद्धाश्रम, उसके नाम से ही उस गाँव को सिद्दापूर से पुकार जाता है। इस ग्राम को अनेक साधुगण आ जाते थे, प्रवचन करते चले जाते थे।

"बहुत बार देखा जाता है कि अध्यात्म (वेदान्त) को क्रमसे बेच रहे हैं। कोई शास्त्री या वेदान्ति वक्ता स प्रवचन करने निमन्त्रण देने गये तो कार्यक्रमका निश्चित दक्षिणा निर्णय कर के आते जाते हैं। परन्तु वे विशेषतः लकडी से बनाया गया कलछुल के समान है ? या नमक के समान है ? उन्हीं को मालूम !!, क्यों कि इन दोनों को रसोई बनाने में उपयोग किया जाता है

किन्तु गुणधर्म अलग २ रहने का याद रखना आवश्यक है। अस्तु:।

तीन चार बरस से एक सन्यासी दक्षिणदेशसे इस ग्रामको आया करता था, एक महीने तक रहने के साथ प्रवचन करता था। उनका लाल शरीर मजबून किन्तु अद्वैति था। अपनी गंभीर वर्ण से गाँव मे सिक्का जमाया था। ग्राम के एक भक्त तेजमूर्ति ने साथ से युक्त इस आश्रम की तरफ सायं रोज आया करता था। अद्वैति को इस तरफ बार २ लेकर आना गुरुदेवको अच्छा नहीं लगता। इस स्थानमें बहुत बार, बहु देर तक विश्राम न किया करने को तेजमूर्ति से बताया था। ता भी वे नहीं माना, इसका परिणाम यह हुआ कि श्री नित्यानंद ने उस आत्मानन्द सन्यासी को ज्ञान गुरु मान लिया।

अगले बरस आत्मानन्द सिद्दपुरको आया तब उसका निवास आश्रम में हुआ। उस सन्यासीके साथ एक पचास वर्ष की विरागिनी आयी थी। उसका नाम गीता था। प्रवचन करता था। आत्मानन्द के गुरु जब थे तब से अब तक मठमें था, अब उसके साथ आगई थी। बहुत मुमुक्षुओं ने उनसे शिष्यत्व अंगीकार किया था। आश्रम में नित्यसे परमार्थ प्रतिपादन करते थे–

" ब्रम्हज्ञानी को इंद्रियों के व्यवहारसे संबध नहीं होता' क्यों कि साक्षी होकर रहता है। उसे अहं ब्रम्हास्मी का अपरोक्ष

ज्ञान अवस्थामें शोक नहीं, इस स्थिति को छोडकर अन्य प्राप्ति करने का विचार भी नहीं रहता। स्मृति प्रमाण इस प्रकार है- तत्र का मोहः कः शोकः। प्रारब्ध के अनुसार भोगादि अपने आप आ जाते हैं। जैसे नदियाँ बिना प्रयत्न से सागरसे मिलती हैं तथा सागर न नदियोंका अपने पास आ जाने को न प्रयत्न करता न चाहता है। जो नदी आकर मिलती उसे मना नहीं करता, आये या न आये सागर सदा भरपूर रहता है इसी तरह ज्ञानी रहता है। गीतामें भी कहा गया है- अपूर्यमाण मचल प्रतिष्ट- । यदि भोगादि स्वयं आ गया तो ज्ञानी उसमें रहकर विषयानुरागी बन जानेकी शका भी होता रहता है। क्योंकि पूर्वमें हम सुना है कि पान्च क्रिमियोंने पन्च विषयोंसे मोह करके प्राण खो जाते हैं। भ्रमर, मछली, गज, पतंग, मृग ये पान्च प्राणी हैं। इन्होंने स्पर्श, रूप, रस, गंध विषयों से मृत्यु को पा लेते हैं। एक विषय एक क्रिमीमें रहता हैं इससे ही उसको हानी होता है। यदि पान्चों विषय उसके पास हो तो वह कैसे टिकता है ? इन पान्च क्रिमियाँ विषयों पर आसक्त रहते हैं। किंतु ज्ञानी भोगादि आनेसे सुखी होता नहीं, या न आने से दुःखी होता नहीं, किंतु दोनों प्रसन्ग में उदासीन रहता है। इसलिए उसका प्रभाव ज्ञानीपर न पडता। जिस प्रकार व्यभिचारी स्त्री परपुरुष के साथ रमण करती है, और बाह्य पुरुषोंके सामने अपने पति पर प्रेम प्रकट किया करती है। किंतु सत्य यह है कि पतिपर उदासीन रहती हैं। अपना निज प्रेम को वीर पुरुषपर रखती है। इस प्रकार जीवनमुक्त ब्रम्हज्ञानी भोगमें मन लगाया जैसे भास हो जाय

तो भी आन्तरिक रूपसे भोगादिमें उदासीन रहता है। इसका कारण यही है उसने उनमें आसक्त नही रहता, न रखता। इस प्रकार ज्ञानी का भोग से हानी नहीं होता है। जिन पुरुष सुख और दुःखादिमें उदासीन होकर चलता है उसको भोगादिसे किसी तरह बाधा नहीं होता। गीतामें इस भावको कहागया है–उदासीन वदासीन– भगवानने कहा है। इसलिए ज्ञानी नित्य मुक्त है,,

ओज माधुर्य से भरा इस पकार आत्मानन्द आध्यात्म पर अनुभूतिसे पकट कर रहा था।

उनके शिष्यगण उनको सदा तीर्थ से तृप्ति करवाते थे। जिस पकार शास्त्र कहता था उसकी परीक्षा एक समय आ गया। उनके जांघ पर बडा वृण हुआ था उसको शस्त्र क्रिया करना पडा। शिष्यगण डाक्टरके पास दिखाने बुला ले गये, डाक्टर ने शस्त्र क्रिया करते समय आत्मानन्द को प्रज्ञा शून्य करना चाहा, परन्तु वह न माना, यथावत् सो गया, डाक्टरसे कहा, जो करना सो करले ना। उसने वैसा ही किया आनन्द टस से मस तक न हुआ। डाक्टरने अपने जीवन में ऐसा रोगी को नहीं देखा था। और आगे उससे एक पैसा फ.ज भी न ले लिया।

श्री नित्यानन्द ने आत्मानन्द के साथ एकान्तमें आनन्द करते थे। इसका परिचय शिष्य वर्गोंको छोडकर अन्यत्र कहीं मालूम न था। इसी तरह जब वह आ जाते तब चलता ही था। लेतेर

खूब पीना प्रारम्भ हुआ, सभी को मालूम होने के बाद, अन्य मान्य पूज्य आचार्य यतियोंने इस आश्रमको आना छोड दिया, तथा टीका करने लगे। उन्होंने विषयी बनकर क्रमसे मधूशाला को अपने पास रख लिया। आने जाने लोगों का व्यवहार कम हो गया।

३

शिवराज मठकी सेवावृत्तिमें था। सन्चार करके आने जाने भक्तों का देखभाल विशेषतासे वही करता था। बाल्यावस्थामें माता पिता मर चुके थे, इसका देखभाल चाचा ठीक से नही किया करता था। इसलिए ससुरने शिवराजको ले जाकर अपनी पुत्री शारदाको अर्पण करके कुछ पढवाया था। तथा उसने निश्चय किया था कि वहीं एक तीन-चार एकर भूमिको शिवराज के नाम खरीद करके अपने पास रखना श्रेयस्कर हैं। किन्तु आगे श्री नित्यानन्दने इन दम्पतिको बुलाने एक सेवक को भेज दिया। तब उसके साथ भेजना पडा ससुराल से आकर तस पैंतीस वर्ष हो गये थे। पहले दो बच्चे मरचुके थे बाद दो पुत्र, दो पुत्रियाँ हुई। पहले का नाम निरञ्जन था, बडा हो गया था, इसको अपना आश्रम उत्तराधिकारी लेने निमित्त हाईस्कूल को भेज दिया था। यह उसका पैंतीस वर्षके सेवाफल के रुपमें ग्रहन किया था। इनको विद्याभ्यासके निमित्त विद्यालय को भेज दिया गया। उनको वहाँ कुछ छात्रवृत्ति मिलता था। जब उनके पास पैसा खतम हुआ, आश्रमको खत लिखा। उस खतको नित्यानन्दने देखकर उसके पिताजी को दिया, फिर कहा कि उसको

रुपये भेज देना। अब भेजने को रुपये नहीं, क्योंकि जब सन्चार से वह आता है तब शिवराज को बुलाकर सारा हिसाब लेता, मधुशाला को भर देता था।

लोग के सामने करते थे तुम्हारा भावी स्वामी रुपने भेजने खत लिखा है कारण कुछ पैसे जमा करके, भेज देना, तब वे सौ दो सौ रुपये जमाकर, गुरुदेव नित्यानन्द के हाथ र देते हुए पोष्टद्वारा भेजने का बता कर चले जाते थे। क्योंकि उनका निरन्जनका पता नहीं दिया था, इसलिए वे देकर चले जाते थे। मधुशाला मालिकके इस प्रसंग का लाभ उठाये बिना नहीं रहता था। शिवराज कुछ वैदिक कर्म करने बाहर जाता था। उसमें जो प्राप्ति होती थी, उनको उसी स्थानपर पोष्ट द्वारा भेज देता क्योंकि आश्रम को आने के बाद उससे फिर हिसाब न मांगाजाय।

नित्यानन्द की वृत्ति और विषय होने लगा था। उनको सेवकसे बनाया गया दाल रोटी से तृप्ति नहीं होती। कुछ विधवा स्त्रियोंने, श्रीमतियोंने, और श्रीमान पुरुषोंने उनका शिष्यत्व अंगीकार किये थे। पुरुष वर्ग अधिक था। उन विधवा स्त्रियों में सुवनी नामक स्त्रीको सेवा करने अपने पास रख लिया। इसने सबसे ज्यादा बार मठको आती जाती थी। तीस पैंतीस वर्ष का उस स्त्रीको पूर्व पतिसे कोई सन्तान न हुआ था। एक सौत पुत्र था। इसने उसको ठीक से नहीं देखा। जब सुवनीने सौतके उपर शादी करने के बाद पति के घरमें पाद रखे छः मास के बाद ही सशक्त पतिका अवसान हो गया था। उस बच्चे को सासने

पालन किया, इसने मायके घरमें जाकर स्वेच्छासे रहने लगी, जब वह विधवा होगई थी, तब अठारह बरस की थी। तीर्थपुर में गली गली घूमने में प्रसिद्ध हो गई थी, तथा वहाँ एक हरिजन चन्द्रु नामक चालीस वर्ष के पुरुषसे मिलती थी। कारण उसका कोई मर्यादा वहाँ नहीं था। पूर्व पुण्यसे इस सिद्धाश्रममें एक सेविका बन गई थी, पान पात्रसे अत्यन्त प्यारी थी। पुरुषको वश करने का वनौषधि उसको मालूम था उसका प्रयोग नित्यानन्द पर पूरा प्रभावित किया गया था, वहिनको छोडकर बन्धु वर्ग इसका अनादरसे देखते थे।

निरञ्जन को एक समय एसा आया कि उपवास रहना पडा, एक तीव्र गति पत्र भेज दिया, वह पत्र नित्यानन्द के हाथ में आ गया। सिवनी के बोध के अनुसार शिवराजका खत देकर रुपये भेजने को कहा, आगे बताया– तुम्हारा पुत्र पढने गया है तुम ही पैसे भेज देना अब मेरे पास एक पैसा भी नहीं है,, सुनते शिवराज ने मौनसे उलटा पाँव रखा।

इस घटनासे दो दिनमें ही चारू शिवनी तथा अन्य एक स्त्री को साथ लेकर प्रवास करने चले गये। यह देखकर शिवराजको दुःख हुआ। जो पुत्र विद्या प्राप्त करते समय सो पिता विद्या को न पढवाया तो वह पितृत्व पद से हट जाता है। जो पुत्र अनारोग्य होकर चटाई पर सो गया है सो माता उसका उपचार नहीं करती है तो मातृत्वसे पदच्युत हो जाती है, जो शिष्य गलत रास्ते से जाता है सो गुरु उसे समझाता नहीं है तो गुरुत्व

से भ्रष्ट हो जाता है। इसी तत्व को स्मरण करके, जहाँ तहाँ याचन कियागया जितने मिल गये थे, उतने ही उनको भेज दिया।

किसी तरह उस वर्ष को पार करके आते समय निरन्जन अपने प्रिय अध्यापक से सहायता लेकर गाँव पहुँचा, बाद रुपये उसको भेज दिया गया। सर्व समाचार मालूम होने के बाद स्वयं शिक्षण सहायता धन कमानें बाहर चला गया, किंतु जितना चाहे उतना रुपये मिला नहीं था, नित्यानन्दने साथ नहीं दिया, आगे उस द्रव्य को भी लोप कर लिया। इस व्यवहारको देखकर एक दोस्तने उससे बताया को श्यामनगर में एक बृहन् आश्रम है, बडा संस्थान है, उस मठकी ओर से विद्याध्ययन प्राप्त करने चले जाना, उपाधि प्राप्ति होने के बाद उस मठका अधिकार स्वीकार करना है। इस दोस्त का उपदेश सुनकर अमान्य किया, क्योंकि इस मठके आधारमें ही बडा होकर इस आश्रम के नाम से ही पैसा इकठ्ठा करके विद्या कुछ प्राप्त किया है। यदि छोड जाय तो अन्नद्रोही बन जाता था। इसलिए निरन्जनने निराकरण किया।

निरन्जन को भिक्षा मांग नें एक सेवकके साथ बाँधिया देकर गुरुदेवने भेज दिया। कुछ दिन के बाद उसे मठाधिकार भी सौंप दिया। किंतु यह याद रखना आवस्यक था कि जो अधिकार देते समय गुरुने कर्ज़ किया था, उसको निरन्जनने ही चुका दिया।

निरन्जन गुरुदेवपर क्रोध बन गया था, पीना उसे अच्छा नहीं लगता। इससे अधिक शिवनीपर रंगचड जाता था क्योंकि जब कभी देखता है तब उस बिना शरम शिवनी हाथमें रसभर भरकर खडी रहती थी, उसके साथ पर्यंक पर बैठ जाती थी। ऐसा शरारत, निरन्जन देखकर, एक दिन खूब फटकार दिया। सुनते हंसती चली जाती थी। शिवनी इन अधिकारी को अपने हाथमें लेते उसको मिलना चाहती थी, उसने उस गौरव को धूलमें मिला दिया था।

निरन्जन गुरुसे विरोध करता था, तब वह विचार करके आत्मानन्द के पास भेज दिया गया। आत्मानन्दको प्रथम खत लिखकर इसका विषय बता दिया था। निरन्जनसे नित्यानन्दने यह बताकर भेज दिया था, कि दो बरस तक उनके हाथमें गीता अभ्यास करके लौट आ जाय। आत्मानन्दने तीन-चार बार परीक्षा किया किंतु उसने तीर्थके बारेमें न मान लिया। स्पष्ट होकर आत्मानन्दसे पूछा कि ज्ञानी हो या अज्ञानी जिसको शराब पीने का नियम किस शास्त्रमें लिखा है? पहले छोडने को क्यों बताया? लोक, शास्त्र, देहवासना जब तक नाश नहीं होता तब तक निश्चय ज्ञान कभी नहीं उदय होता। जिस अमृत को जिसने पिया है, उसने क्यों पानी के लिए ढूंढता है? अन्तिम उसने सहमत दिया। ज्ञान समझाना है, करना नहीं। ज्ञानके नाम पर लोग करने जाते हैं। यदि उसमें अभेद के तत्व को स्वीकार करना हो तो, उसने यह नहीं देखना चाहिए कि यह रुप है, कुरुप है यह मीठा है, कडुआ है! यदि शराब, मांस, स्त्री, इत्यादिमें अभेद

है तो, हम गंदगीको क्यों निकाल देना चाहिए ? किंतु उसको ही शुद्ध मनसे स्वीकार करे। श्रुतियोंने सर्व सिद्धान्तपर जिस प्रकार लिखा है, इसको भी लिखना चाहिए था। परन्तु नेति नेति सूत्रसे प्रकट किया है।

४

सिद्दपुरमें शिवनी की एक पच्चीस बरसकी बहिन थी, इससे वह और कुछ सुन्दर थी। शिवनी उस आश्रम को आने के बाद बार २ आठ-दस बरसकी बेटी के साथ आती रहती थी। भाण्डागार उसके हाथमें था, बहिन कलावति को, वह जो २ मांगती है सब को देते भेज देती थी। कुछ दिन तक गुरुदेवको मालूम नहीं था। एक महिनेकी सामग्रि एक-दो सप्ताहमें खतम हो जाता था। एक बार धान्य गुप्त से भेज रही थी, तब निरन्जन ने देखा, गुरुजीको बताया, इसको खूब गाली दिया गया। बहिन को गाली देने के कारण आश्रम छोडकर चले जानेका विचार बता देती थी, इससे डरकर साधुको मौन होना पडता था।

कलावतीने घरको नयाघर बनाया। पति पगार पर कूली जाता। उसने उसे छोड दिया। दो-तीन भेस खरीदकर उसको लेकर चराने आश्रम की तरफ और दोनों आ जाते थे। सायं तक रहकर फिर घर लौट जाते थे, तथा जब मन चाहे तब कलावति पीते २ रातभर सुखसे विश्राम करके उदय के पूर्व ही हाथमें एक डिब्बा लेकर घर चली जाती थी। सप्ताहमें तीन २ चार २ दिनतक उसके घरमें आग किसी ने नहीं देखा था। यह

सब देखकर गुरुजीसे फिर एक बार निरन्जनने विचार किया। शिवनी को स्पष्ट कहा कि कलावती इधर आने को मना कर दो। इसको उसने न माना, उसके साथ मुख खोल दिया।

यह समाचार गांव भरमें प्रसारण हो गया। तब से ग्रामके लोग, पूर्णरुपेग आना छोड दिया। गुरुदेव का खास भाई का पुत्र मठमें था. शादी हुई थी, बाहर भी उसने आँख लडाई थी. इसमें शिवनीने कूटनी का कार्य करके यशस्वी हो गई, इसका उपकार के लिए कामेश उसका पाद धोया करता था। इसके कहने के बाद गुरुजीने कामेश को ६ एकर जमीन खरीदकर देनेका परिश्रम भी किया था।

गुरुजी मासमें एक दो दिन बाहर जाना कभी २ करते थे। तीर्थपुर को शिवनी छोडकर इधर आयी. चन्द्रुने उसका अनुगमन किया था। सिद्दपुरमें हरिजन गल्लीमें रहना था। जब पूर्ण-सूचिन के अनुसार वह मांस, सुरा लिया करता था। उसदिन कमरे के पीछे से ताला लगाकर रातमें ग्यारह बजने के बाद गाँव को तरफ चला जाती थी, रातभर पीते माँस खालेनी थी, तृप्ति होकर फिर रातके चौथे प्रहरमें उस पुरुषके आधारसे लौट आती थी। इस कार्य को जब नित्यानन्द किसी कार्य निमित्त जिस दिन जाता है उस रातको ही निषिद्ध पदार्थोंसे और निषिध पुरुषसे मिल जाती थी। मछली, मघु, अधर मघु पान करने से इसका शरीर स्थूल होते जाने लगा था, किंतु साथ ही शरीरज का काम वेग कम नहीं हुआ था।

शिवनी का अछूत पुरुषसे संपर्क मासमे एक बारतो अवश्य होती थी, गाँववालोने भी उस गल्लीमे देखलिया था। एक बार साधुजी ने दो दिन की अवधि बताकर भाग गये थे. नूतन ग्रह प्रवेश, शांति, शुद्धिकरण करने का प्रसग आने के बाद अधिकारी के रुपमे जाते थे। उसदिन रातमे ताराओंके मंदप्रकाशमे विट के पास चली गई थी। किसी कारण वश उसने उसी रातमे लौट आगये। आते देखता हूँ ताला लगाया हुँ, अभी जाकर आधा घंटा हुई होगी, किन्तु नित्यानंद ने समझ लिये अपने गाँव को दो दिन के लिए चली गई होगी, साथी न रहने के कारण न नींद आई विचार करते सो गया था। रात ४ बजे दो व्यक्तियों को आते छत से देखा, हाथमे मंदप्रकाश तक नहीं था, अरेनेग्न एक स्त्री ने पुरुषके पूर्णआश्रयमे अस्पष्ट बोलते, हाथमें मांस से भरा एक छोटा सा अस्तीको कुट्खाते आरही थी, जब नजदीक आगये तब उसको देखते विस्मयके साथ व्यथित हो गये। इस चित्रको उसने कृष्णपक्ष दशमी तिथि की चांदनी रातमें चोथे प्रहरमे देखा। किंतु उसके बाद भी शिवनी को नही छोड सका। इस प्रसंगमें आत्मवत् सर्वभूतेषु– इससूत्रको उसने सार्थक बनाया।

उसने एक बार कूटनीति का अनुमोदन किया था। खूब नित्यनंद को पिलाकर कानभर दिया था–– "मैं मरने तक मुझे पालन करने का वचन निरंजनसे लिया तो यहाँ रहूँगी. न तो कल आज्ञा देना, चली जाऊँगी"। उसके बाद नित्यानंदने निरंजन को बुलाके प्रथम उपदेश देना प्रारंभ किया––

"मैं तेरा गुरु हूँ, गुरु परमात्माके सदृश्य है, वह जो कहेगा रामबाण होगा। गुरु आज्ञा पालन करने का कर्तव्य शिष्यका धर्म है। शिवनी मेरी सेवा करती है, ऐसे आपसे नहीं हो सकता, इसलिए मेरे प्रीत्यर्थ उसका जीवमानतक पालन करने का वचन देना, नमस्कार करना चाहिए, तब शिष्यनाम सार्थक होगा, नहीं तो--

निरंजनने सुनकर गुरुजी से नम्रतासे कहा--- "अधिकार देते समय सर्व अभ्यागतो को समान समझकर चलनेका नमस्कार आपने लिया है! किंतु दूसरा नमस्कार कहाँ से दूं? कैसे दूं" ?

उस वाक्यको सुनकर क्रोधसे कहा-- मेरी आज्ञा पालन किया तो वह इस स्थानमे टिकेगा, नहीं तो ध्वंस हो जाएगा।

....

नमस्कार करो! चुप क्यों खडे हो ?

अब चुप नहीं रह सका--

"आज शिवनी को पालन करने का नमस्कार मांगते हैं, कल कलावती का परसों किस का" ?

इस घटनासे निरंजनको गाली देना प्रारंभ हो गया। यह व्यभिचारिणी पुत्र है, पिता की बातपर जानेवाला गुरुद्रोही है, इसलिए मेरी बातको अमान्य किया।

ग्राम के पुरुषोंने मठ के इस व्यवहार देखकर कुछ कहने आगये, निरंजन इनके साथ था। उन्होंने नित्यानंदसे कहा-

"मठकी अवनति का कारण विषय, तथा विषयके साथी से बनी है, उसको छोडदेना, उसको मठसे बाहर निकालकर एक सेवकको लाकर देंगे"। पर गुरुने उस आराध्य मूर्ति के बिना न रहने का निश्चय किया। उसने दूसरी बार सुहाग लूट जाना विधवा होना नहीं चाहती थी।

उसका और एक कारण यह था, कृष्णपक्ष दशमी तिथि की रात चौथे प्रहरमें जो हाथ में गोस्त था, उसके स्वादको उसने स्वीकार किया था। अतिनशामे एक दिन मुर्गी का अस्थिरहित, पूर्ण पकाहुवा मांसको (गोश्त) उसे शिवनी ने खिलाया था, उसका स्वाद पूर्ण ले लियाथा। शराब के साथ उसका दूसरा व्यवहार सुरु हुआथा, इस के लिए पैसोंकी कमी होने लगी। उसको प्राप्त करने स्वयं मासमें तीन-चार दिनतक अवश्य जाता था। अब ज्योतिष्य को हाथमें ले लिया था, किसीने कभी कोई पूछने आये तो उसको एक सौ सौ रूपया बता देता था। ऊसको लेकर एक यंत्र लिखकर भेजदेता था। कोई कोई पुरुष को चांदी रुपयाँ पच्चीस, ग्यारह, पान्च तक बतादेते, बाद कुछ न कुछ गांठ बांध कर भिजवा देते थे। जो एक बार आता था, वह दूसरा बार आश्रम की ओर तक नहो देखता था। इस गोस्त का स्वाद प्रभावसे वामेश कल्लावति उसका पति तक न बचे थे।

निरंजनको यह मालूम होनेके बाद गुरुसे कहा कि यह उचित नहीं, आपके जैसे धार्मिक पुरुष अछूतके समान व्यवहार तथा स्वीकार करने प्रारंभ किया त', स्थानकी मर्यादा रहा क्या ? तब नित्यानंदने निरंजनसे बताया, कल पैदा होते आज मुझे पाठ कराने आये हो ! मैंने जो प्रयत्न सेतुम्हें पढाया उसका उपकार करना यही है। मुझसे पालन किया गया बच्चा !! चल् यहाँसे"--- इमसे चुप न रहा, निरंजनने और पूछा कि किसके आधारसे आप एसा खेल रचा है ? गुरुने और क्रोध बनते चीत्कार किया-- बिना माँगे जो मिलता है, उन्हें स्वीकार करने में कोई बाधा नही, पाप नहीं। बिना याचना से मुझे जो चाहिए सो मिलता है, में स्वीकार करता हूँ स्वयं रामने चित्रकूट मे मांस स्वीकार किया है। प्राचीन काल में महातपस्वीयोंने मांस को ग्रहण किया है। विश्वामित्र बामदेव, भरद्वाज इत्यादियोंके नाम सुना जाता है। यज्ञ यागादि में पशु-हिंसा करते थे, नियमके अनुसार जो करता वह हिंसा नहीं होगा। देवता कार्यों में मांस भक्षण कहा गया है, इसलिए दान के रुप में आता है, मे स्वीकार करता हूँ।

गुरुजी! यह पूर्वार्ध का है, उत्तरार्ध का नहीं।

गुरु प्रसाद के रुप में सभी को सेवन करता हूँ, पूर्ण पुरुष पूर्वार्ध में रहें या उत्तरार्ध में, मुझे कोई बाधा नहीं, न्यायालय में गवाह को जिस प्रकार भय नहीं होता उसी प्रकार मुझे कोई डर नहीं। न्याय निर्णयमे उसे डर नहीं, जिस प्रकार दोनों

पार्टियों को पूर्तिमें रहता है। वह दोनों पक्षोंको देखते साक्षित्व रहता है। उसी तरह मैं हूँ. श्री कृष्णने कितने उपभोग किया तो भी वह ब्रह्मचारी कहाँ जाता है, स्थिति को किसी वस्तु का बाधा नही। चला ! यहाँसे, और एक बार तूने मेरे साथ कोई संघर्ष किया तो उसका परिणाम शाप में परिवर्तन होगा, याद रखना !

५

जब निरंजनने शिवनी को पालन करने इनकार किया, कलावतीने स्वीकार किया था। उसके द्रव्य संग्रह करना प्रारंभ और जोर हुआ। लोग को मालुम हुआ था, शिवनी गर्भपात करने का औषध देती है, उनसे सोसे पांचसोतक वसूल कर लेती है। इस व्यवहारसे तीन-चार हजार तक संग्रह हो गया था। ग्राम में श्रीमति कलावति को ब्यांक समझा था सो रुपये के लिए एक महिने को चार रुपया वृद्दि बताया जाता था, आभरण गिरवी लेकर पैसा दिया जाता था।

शिवराजको शिवनी जितना चावल देती थी, उसमें तीनों तृप्ति रहते थे। कोई आया तो उधर ही भेज देती थी मास में कई बार लस्सी पीकर रहना पडता था। इधर कामेश को शराब मिलता था। वही भवानी बन जाती थी. उसके प्रसाद सर्वस्वीर करते थे। गांवमें इनमें कोई गये तो, लोग उदासीन होकर दूरसे चले जाते थे।

ग्रामीणोंसे युवक होकर शिवनीको मठसे बाहर निकालने प्रयत्न असफल होने के बाद, उसने निरन्जनपर और दांत चबाना सुरु किया था। इनका परिणाम यह हो गया कि नित्यानन्द ने भारी निष्टुर गाली देना प्रारंभ किया था।

अब देखने में शिवनी और सुन्दर लगती थी, शरीर नया तेजसे उमडपड रहा था। अति विषय के कारण नित्या नन्द का शरीर पीडा से भरा था, रातभर दर्द से चिल्ला रहा था। इस तरह पिछले चार सालसे वैद्य को रुपयोसे भरी थैली को अर्पण करते आये थे। सुबह होते निरन्बन गुरुसे कहा– सर्वका साक्षित्व होते हुए रातभर क्यों चिल्लाते रहे क्रोधसे निरन्जनको देखता रहा, शिवानीने उसका उत्तर दिया "वह शरीर का गुणधर्म है।

६

शिवनीने चारों तरफ दृष्टि रखते अपना जीवन चलाती थी। इन तीनोपर तो मनमें द्वेष रखा गया था कि किस तरह इनको यहाँसे निकाला जाए। शिवराजको मालूम हो गया था कि अछूत के साथ गाँवसे आना, तथा दोनों मिलकर बातचीत करते जाते देखा था। इसका प्रतिकार किस प्रकार किया जाय, इसी विचार में मग्न थी।

शिवराजका शरीर स्थूल था, सन्चारमें आरोग्य बिगड गया, निरन्जनने जाकर आश्रम को लाया, किसी तरह प्रयत्न

करके औषध मालिश के लिए तेल खरीद लाता था। यह सेवा उन दोनों को स्वीकृति नही थी। रातभर अवाच्य शब्द के साथ आश्रम के बाहर जाने की आज्ञा दे रहा था। उसने नित्यानन्दसे कह रही थीं–

तेरे शापसे ही उसको रोग हुआ, आपने ठीक बनाया।

इस वाक्य को एक ग्रामीण पुरुषने सुनकर अपने साथीको बता रहा था – "मुझे अस्सी बरस हुए, भाई अपने बडे भाई को शाप देना तथा वह लगने का समाचार, पुराणों से मैंने कही न सुना, अन्यत्र नहीं देखा। वह शाप किसको देगा, शापका ही फल माना जाय तो, वह तत्काल लगना चाहिए, पर भी वह शरीर को या आत्मा को? शापका फल प्रारब्ध के अन्तर्गत माना जाय, जो सत्य रीति से जान लिया है, सो किससे निष्ठुर से बोलता है? आत्मवत् सर्वं भूतेषु जो जान लिया है, वह मौन धारण करके अपने आनन्द में रहता है, बुद्ध, बसव, निजगुणि शिवयोगि, आद्य शंकराचार्य महान पुरुषोंने किनको शाप दिया था? शाप को एक बार नाटक में देखा है। जब जिस दुर्वासने जिस स्त्रीने अपना ध्यान एक प्रोय पुरुष पर रखने के कारण उसको अनादर करने से कुपित होकर उस स्त्री को उस स्त्री के निमित्त उसका मन पुरुष से शाप दिया था, वह तत्काल ही उस चक्रवर्ति को पूर्व विस्मृति बना दिया था। इन पुरुषोंने कुछ पीकर बोध के अनुसार शाप देते हैं कुछ शाप दिये हैं, कितने बरस गत होने के बाद भी उसका

कोई परिणाम नहीं निकला है। उनका प्रारब्ध से जो होता है, उसको शाप का परिणाम मानते बैठते हैं। धार्मिक स्थानों से समाज सुधार होने का संभव होता रहता है। संसारी पुरुष विषय से पीडित होकर विश्रान्ति लेने इधर आये तो उसी स्थान में उन विषयों का प्रभाव पूर्ण से हुआ तो, संसारी पुरुष को विश्रांति लेने का स्थान है कहाँ? और कहाँ मिलेगा? जहाँ देखो तहाँ उस संन्यासी मठ में बिना नाते नारी का अधिकार देखा जाता है। जिस मुंह से भगवान का नाम कहा जाता है, तिसमें पादरक्षक धारण करके चिल्लाना ही साधु सन्यासीयोंको वेद पाठ बन गया है।

इस आश्रम पतन होने का कारण किसपर लगाया जाय? न, आश्रम का प्रारब्ध जानते चुप रहना अच्छा है। एक निज वेदान्तिने आकर इनको विषयी मात्र बना के चला गया। कहा जाता है, उनका शिष्य भी अद्वैत के नाम पर विषयी बन गया है।

आश्रम का पूर्व महान घटना तथा आजकल का मिटते रहना, इन दोनों से तुलना करते, व्यथित होते जा रहे थे।

शिवनी समय समय के अनुसार चन्द्रुसे भी मिलती थी, यह समाचार सर्व को विदित हुआ था। उन दोनों पुरुषों से अलग अलग से अपनी आशा की पूर्ति कर लेती थी। उसका प्रारब्धवशात वह गर्भिणी हो गयी थी। स्वयं अपना गर्भ

गिराने को विविध वनौषधिको ले लिया, वह सफल न हो सकी। अब वह बहुत बार बाहर न आती थी। निरन्जनको यह देखकर मन में पीड़ा हुआ। गर्भ धारण में भी विषय त्याग न किया था, अब से निरन्जन के साथ और विरोध करने लगी। हरदिन उस प्रकार उन दोनों से निंदा खाकर तीनों हृदय संकट ज्वाला में जल रहे थे। प्रारब्ध के अनुसार शरीर का शिथिलता, उपर आश्रम से चल जाने का जुल्म करना, साथ ही क्षुधादाह से युक्त, आँसु बहाते उन त्रिमूर्तियोंने सिद्धस्वर को मन ही मन वन्दना करते हुए धीरे धीरे आस्रम सीमाके बाहर बन्धन से मुक्ति पाकर जा रहे थे। वस्थि रहा अन्य दो यात्रिक जाते २ उन्हें सात्वना दे रहे थे। उनको देखकर वह हँस रही थी। यह शिवराज का पैंतीस–चालीस बरस की सेवा का फल था।

किंतु शिवराज स्रीमती शारदा को सन्तोष यह हुआ था कि कलावती की सुहावनी पुत्री मालती को गुप्तसे निरन्जनको अर्पण करने का जाल का चाल शिवनीने बनाया था, उस जाल को निरन्जनने ठुकरा दिया था।

विषयी गुरुसे सेवा करने से अधिक सुख चैतन्यमय माता-पिता में लक्षित करते हुए, निरन्जन श्रवणकुमार जैसे शांत मुद्रा में निरन्जन की पदगति को देखकर पथिकों का मन द्रवित हो रहा था।

७

पाच महिना भरा शिवनी पर्यंक पर बैठते पैर दबा रही थी। आठ वर्ष आयु में पदार्पण किया गया, मधुमूर्ति का सेवन यथावत् पूर्ववत् पीडा जोरसे प्रारंभ होने के कारण आँ आँ, आवाज कर रहा था। तब शिवनी नेत्रोंसे सूचित कर रही थी– यह जीव का धर्म है !

नहीं, यह मन का गुणधर्म है!!

८

धारण किया गर्भ शिवनीको आँखों में खटक रहा था। नवाँ महिने तक एक आश्रम के नजदीक एक गुफामें दिनभर रहती थी, रातमें यहाँ आती थी। गुप्तमें रखा गया था। श्री नित्यानन्द को एक पुरुषने चार कोस दूर अपने नागनूर गांव को ले गया था, क्योंकि उसकी बेटीने व्यभिचार करके एक बच्चे को रातमें बहिर्देश में जन्म दिया था। गांववालोंने उस घर को समाज से बाहर रखे थे। कारण प्रायश्चित के रूप में समाजको पाँच सौ रुपये देकर बाद में इन महास्वामी जी से उस स्त्री को मंत्र से शुद्ध करवाना था। जाते दो दिन हुआ था। उस दिन में चन्द्रुने रात में आने स्थान तक शिवनी को ले गया था, उसकी आशा के अनुसार मछली बनाया था मनभर खाकर निशीथ होने के बाद गांव से आ रही थी, साथ में चन्द्रु था, अभी गाँव के बाहर नहीं आया था, पेटमें गड

बड हुआ, आँखों में तिमिर आई, चीत्कार करते ही वह गिर पडी। उसके सामने उसे सुला रहा था, उस चीत्कार को सुनकर एक वयोवृद्ध स्त्रीने दरवाजा खोला, उस आवाज को सुनते ही चन्द्रु वहाँ से रवाना हो गया। वह एक बच्चीको प्रपंच में छोड कर उसी वक्त अमर्यादासे छुट्टी पाकर चल बसी थी।

उदय होते गाँव के लोग इक्कट्ठा हो गये, और पहचान लिया। हरिजन घरसे आने के कारण ही किसीने न स्पर्श किया, और न दफन, न दहन।

किन्तु यहाँ. किस प्रकार शुद्धि किया जाय इसके लिए किस गुरु को बुलाया जाय तथा उस शिशु के पिता के नाम को किसका लगाया जाय, और किस जाति का नाम संकेत करना चाहिए, इन्हीं विचारों पर उन ग्राम प्रमुखों ने अदांज लगाने में तल्लीन थे। इसका निर्णय उस दिन श्याम तक नही हुआ। अन्तिम जब इन्होंने एक देवदासी को देखा, तब इस कठिन प्रसंग से मुक्ति पाकर एक दीर्घ सांस छोड दी गई।

उस देवदासीने उस सुन्दर शिशु पर करुणायुक्त दृष्टि रखो थी, लोग देख रहे थे, गोद का लल्ला रो रहा था, उसमें इसी शब्द का नाम था। यह जीव का धर्म है।

नहीं ! यह मन का गुणधर्म है। इस आवाज को एक वृद्धने सुनकर कहा – उसमें ही इसी शब्दको दुहराई जा रही है।

९

चार पांच दिन के बाद नित्यानन्द आसन को लौट आ गया, तुरंत उस गुहा की तरफ मुड गया, जब वहाँ उसको नहीं पाया तब उस स्थान से विचार में सिर नीचा करके आते हुए अपने चाचा को कामेश देख रहा था।

१७–७–६५

पदपात

१

कुछ शाला बालक खेल रहे थे, कुछ पढ रहे थे। अध्यापक अपने स्थानपर बैठा था। इस सेवा से निवृत्त होनें को और दो-तीन वर्ष बाकी था। सुबह दस बज गये, कोई उपन्यास देख रहा था। एक सात वर्ष का छात्र आकर सामने खडा हो गया। देखते गुरुजीने बालक से कहा –

क्या होना है ? कहो, डरो मत !
माँ सो गई है, जीव को आराम नहीं।

तुझे करना क्या है ?

अभी जाकर कुछ दवा, गरम पानी पिलाना है।

शिव! शिव!! घर में कोई नही ?

नहीं !

अच्छा, किताब लेकर चले जाना, आज नही आना, माता के सामने रहकर उसकी सेवा करना, समझा ?

उपन्यासमें मन न लगा, कोई विचार करता रहा। एक लडकेने दौडते २ अन्दर आने के बाद कहा – गुरुजी!! पिछले साल जो अधिकारी आया था, उधर से आ रहा है। उठते द्वारपर आकर देखता है, शालाके नजदीक अधिकारी आ चुके थे। हाथ में रहा व्यांग लेते अन्दर आ गये। सब लडके खेलना छोडकर तीव्र गति से अधिकारी के सामने उपस्थित हो गये। किसी विद्यार्थी से कुछ न पूछा, न उत्तर पुस्तक को देखा। उत्तम रिपोर्ट लिखकर चले गये। ग्यारह बजने के कारण गुरुजी छात्रों के साथ शाला बन्द करके गांव की ओर चले जाते रहे।

४

उस गांव में कोई पुरुष उसपर अठारह साल से बुरा रिपोर्ट स्कूल इनस्पेक्टर को नहीं भेजा था, इतना ही नहीं, कोई उसके सामने सिर उपर करके नहीं जाते थे। किसी के साथ बैठता

नहीं, चाय, बीडी, कोई व्यसन न था। गांव में कोई झगडा हुआ हो, सीमावाद इत्यादि सभी प्रश्नों को इसके सामने रखते थे, उनको ठीक निर्णय देकर दोनों पार्टियों को मिलाकर भेजता था। कोई पुरुष उपहार के रूप में कुछ देने आये तो नहीं स्वीकार करता। गंभीर परिस्थिति का परिहार उसके घर में होता था, किन्तु अपना नित्य अध्यापन कर्म करने के बाद सामाजिक सेवा पर मन लगाता था। काफी विद्यार्थी इसके हाथ में पढ़कर आज उच्चतम स्थान में विराजमान है। कहीं उन्हें गुरुजी की भेंट हो जाय तो, विना देखे चले जाते थे, इससे गुरुजी को कोई दुःख न होता, उसे अभिमान था कि मेरा पूर्व परिश्रम का फल दिया गया है। उन अधिकारियों को आत्मा बताती है कि इनका ज्ञानदान ही हमको इस स्थान पर लाया है। ग्राममें किसीने मुफ्तमें तरकारी देने गये तो, उसके दाम को अर्पण करके स्वीकर करता था। इतना तक विचार था कि लस्सी तक नही लेता था। पांच बजे उठते स्वयं कुएँ से पानी लाता था। स्नान, शिवमहिमा स्त्रोत पठन, उसके बाद मल्लिकार्जून दर्शन करते हुए सात बजे स्कूलको जाता था। लडके एसे होशियार हो गये थे कि पिछले साल स्कूल अफसरने परीक्षा लेते समय एक गलत गणित को बताया था। छात्रोंने उसको झट से समझकर अफसर से कहा—

जी ! यह गणित गलत है।

आं!!! किस तरह ?

जो सही नहीं हो आप ही देख लेना !

बताओ तो – मुझे ही सिखाने आये हो !

गुरुजी आनन्द सागर में डुबकियाँ लेने लगे। पन्चाक्षरी गुरुजी को अब चुप न रह सका, अधिकारी से कहा –

नन्हें-से हृदयपर अधिकार से चोट न चलाना, पर आपका गणित दोषपूर्ण है। श्रीमान, इन कलियों में मन चाहे छात्र को आप आज्ञा दीजिए कि वह आपका दोष दिखाया जाय। साहबने विस्मित होकर चक्कर में आ पडा था। अन्तिम गुरुजी ने फटा हुआ कुर्ता धारण किया गया एक गरीब बालक जयदेव को उठाकर दोष को दिखाने उसे आज्ञा देते ही, उसने स्पष्ट से बताकर अपने स्थानपर आसीन हो गया।

अफसर को हार खाना पडा, आगे कुछ न कहा, सभी विद्यार्थियों को पास करके गुरुजीसे आज्ञा लेकर दूसरे ग्राम को परीक्षा लेने सेवकको साथ लेते हुए उलटे पांव रखा। इस लिए इस बरस बिना पूछपाछ से हस्ताक्षर करके चले गये थे। गुरुजीने उस दिन से विद्यार्थियों के लिए और भी आगे हृदय का ताला खोलने को सिद्ध हो गया था।

जब यह समाचार नंदिपुर में फैल गया तो गांववालोंने गुरुजी के उपर और अधिक श्रद्धालु हो गये। केवल शालामें गुरु नहीं हुआ था, गांव में विवाह, श्रावण मास पुराण, स्वातंत्रोत्सव, महात्मों के जयन्तिपर मार्गदर्शी बन गया था। गुरु अध्या

पन वृत्ति में किसी विद्यार्थी का दान्त न टुकरा किया, आंख न खाया, हाथ की हड्डी न टूटी। जब कभी हाथ मरोडकर उसने किसी को थूगाया। रविवार के दिन अपने घरमें पढ़ाता था। शान्त सुशील पार्वती पत्नि थी। गांवके लोग उसे गुरुमाता पुकार कर मर्यादा रखे थे।

छुट्टी में विद्यार्थियों को लेकर समीप का देवस्थान को साथ ले जाता था। अपने २ धर्मानुसार सभी चलने और चलाने का बोध भी था। जो विद्यार्थी सुबह स्नान किये बिना तथा ललाट पर विभूति या चन्दन लगाये बिना आता है, उसे फिर घर भेज देता, तथा उसके माता–पिताजो को समझाया करता था। इसलिए पन्चाक्षरी गुरुजी की प्रशंसा गांव भर में नहीं, चार ग्रामों में फैला था।

२

एक दिन शाला में विद्यार्थियों के साथ आम पेड के नीचे बैठते हुए कथाकुन्ज पढ़ा रहा था। उस दिन श्रवणकुमार का पाठ था। बच्चे सुन रहे थे अपने तीर से मृत्यु हुई उस शव को लेकर दशरथ उसके माता पिता के पास आते हुए, उन्हें जब पानी पीने को दिया, तब उन्होंने पूछा कि तुम कौन हो दशरथ को कहना पडा, कि मैं! मैं! तेरा हृदय हन्तक! नहीं नहीं हृदयांकुर हन्तक, सुनते ही वृद्धोंने रोदन प्रारंभ किया — इसी तरह कहता जा रहा था, उसकी आँखों से भी दो बूंद

आँसू किताब पर गिर पडे। इतने में ही कहीं से रोदन की आवाज सुना। गांव के लोग एक शव को लेकर रुद्रभूमि की तरफ जा रहे थे उनमें उस बालक का रोदन उन पुरुषों को और अधैर्य बनाया, क्योंकि मां के साथ उसने भी पांव न रखें। गुरुजी ढाना छोडकर चुप हो गये. ध्वनि निश्चय करके विद्यार्थियों को शाला बन्द करके घर जाने की आज्ञा देकर उस रुद्रभूमि की तरफ मोड लिया।

गुरुजी को देखते ही वह बालक और जोर २ से उनके पैर पर गिरते चिल्ला रहा था, गुरुजी सहन न कर सका, उसको अपने छाती से लगाकर आँसू बहाते सांत्वना देते हुए कहा- चिन्ता न करो बेटा, वह मर जानेवाली थी, मर गयी। उसके बाद तू मर जाना चाहता है, तो वह नहीं हो सकता। शान्त रहने का कहकर आँसू पीकर शव को विधान पूर्वक दफन किया गया। सब लोग गांव को लौटे, अनाथ जयदेव को साथ लेकर गुरुजी अपने घर लौटे।

रात आठ बजे ग्राम के प्रमुखोंने एकत्र हो कर गुरुजी के घर आ गये, जयदेव के भविष्य का निर्णय गुरुजी पर रखा गया। मास्टरने बताया कि जयदेव मेरे घर में रहेगा, मैं उसका देखभाल करूँगा। सुनते ही लोग आश्चर्य हो गये, किन्तु इसको उन्होंने न मान लिया, क्योंकि एक बालक को गांववालों ने पालने में कोई कठिनाई है नहीं। अन्तिम सात घर में एक २

दिन उसको भोजन करवाने का विचार उनसे सुनकर गुरुजीने परित्याग करके स्वयं पूर्ण परिपालन करने का निश्चय किया।

माता पार्वती पुत्र-सा जयदेव से प्यार करती थी, उसे नये कपडे लाये गये, उसने जय से कहा कि तुझे जो चाहिएगा उसे मेरे सामने बता देना मैं सर्व इच्छा पूर्ति कर दूंगी। हाँ, कहते बाहर खेलने जाता।

४

विद्यार्थियों की अनुक्रम संख्या चालीस से अधिक होने के कारण सरकारने एक अन्य अध्यापक को नन्दिपुर भेज दिया। चवये वर्ग तक आगन्तुक विश्वनाथ अध्यापकने ले लिया, सातवें व र्ग तक पन्चाक्षरीने शिक्षण देना प्रारंभ किया। सिखवाना उस वर्ष अन्तिम था। पहले जैसे ही अपना पाठन क्रिया रखा था। किन्तु विश्वनाथ का पाठन क्रमावली विद्यार्थियों को अच्छा न लगा।

आते दो दिन में ही छडिअ ला छं छं का श्री गणेशाय हुआ। बच्चों का रोदन सुनकर गुरुजीने जाकर उसे समझाया कि यह तरीका ठीक नहीं, पर बोध को निराकार किया। एक विद्यार्थी की उंगली टूट पडी, दूसरे के कान से खून निकल आया, और एक बालक की आँखको चोट लगने के कारण अस्पताल को भेजना पडा। लोगोंने उस पर अर्जी लिखकर भेजना विचार किया था, गुरुजीने दया से बन्द करवाया।

नन्दिपुर से दो कोस दूर मंगलूर से आया करता था। पीने का व्यसन था। एक बार बहुत पिया था, मार्ग में प्रज्ञाहीन होकर गिर पडा था, कोईने उसको लाकर शाला में सुलाया था। इस चित्र को देखकर गाँववालोंने उसको तिरस्कार की दृष्टि से देखने लगे। उनके विद्यार्थी उसके सामने बैठने को डरते थें। छात्रों के सामने बीडी पीता था, कोई कूछ दोष किया, कर्कश होकर गाली देता था। कोई छात्रने प्रश्न पूछा तो ऐसा बताया करता था –

अरेऽ कपि का बेटा ऽ ऽ जोऽ मैं ऽ ऽ कहता ऽ हूँ, उसको ऽ ऽ ही ऽ कंठ करो ऽ ऽ। उसे इस तरह कहने की आदत पड गयी थी।

ऐसा सुन कर बच्चोंको हँसी आ जाती थी, साथ डर भी होता था। कई बार प्रश्नों को उस शिक्षक से पूछते थे, किन्तु उसको उत्तर देने में कठिनाई होने के कारण तब नहीं देता। आगे कहूँगा कहकर उठ जाता था। तब गुरु जी के सामने परिहार होता था।

एक बार पोलीस अधिकारीने इसको विदेशी शराब के साथ पकड कर दो दिन रखकर खूब मर्दन किया। दया करके उपदेश देकर छोड दिया। पिछले गाँव से नन्दिपुर को आने का विवरण तीन–चार महिने के बाद विदित हुआ की उसने व्यभिचारी, मांसाहरी होने के कारण वहाँ से स्थानांतर किया गया था।

जब विश्वनाथ ने नियमित रुपसे आने में विषमता किया तब गुरुजीने बताया तो उसने एक कानसे सुनकर दूसरे कानसे छोड दिया। निवृत्ति हो जाने में तीन-चार महिने थे इसलिए सहन करते चला। अपना व्यवहार छात्र हृदय पर किस प्रकार धक्का लगता है। इसका विचार उसको नहीं था।

निवृत्ति के दिन गुरुजीको मालुम हुआ था। उसने किसी के सामने इसको न बताया था क्योंकि अभी से उपहार का न जोडा जाय। पार्वतीबाईने पति की आज्ञा से एक सो मिठाई बनाई थीं। विद्यार्थियो का सब पाठ पढा चुका था। घर की सामुग्रियोंको ले जाने निमित्त अपने ग्राम नन्दगांव को जाकर दो गाडी ले आने को सूचित करके लौट आया। निश्चित दिन पर वे हाजिर हो गये। रात भर गाडी में चीजोंकी रखा गया। इसको देखते जयदेव को आश्चर्य के साथ दुःख होने लगा। वह दुःख अपना भावी चिन्तन पर था। एक कोने में चटाई पर सिसक रहा था, सूर्योदय तक आँख लाल हो गयी थीं। गुरुजी नित्य पाठ करके मिठाई का डिब्बा हाथमें लेकर विद्यालय को गया। साडे सात बजे नित्य नियम के अनुसार प्रार्थना हुई। जिन विद्यार्थियोंने उस दिन डरके मारे छोड दिये थे, उनको भी बुलवाया गया। सभी छात्र एकत्र हो गये, उनको गुरुजीने एक २ मिठाई सभी को दे दिया, उस वक्त हाथ में प्रेम का कंपन था। सभी को खानेको बताया, उन्होंने विस्मित इस प्रसंग को विचार करते हुए खा गये। श्री गुरुजीने इन छात्रों को जीवन भर का अन्तिम पाठ पढ़ा रहा था—

"प्यारे बच्चों! आप लोगें अपने धर्म से चलना चाहिए कभी झूट न बोलने; गुरुजी के साथ विनय से व्यवहार करना जो आगन्तुक आपके घर को आता है उसे अन्दर बुलाकर सत्कार करके बिना न जाना चाहिए। मिठाई जिस प्रकार रुचिकर है, सब को प्यारा है, उसी तरह आप सब सब को प्यारा बनना तथा रुचिकर होना चाहिए। हररोज प्रार्थना करना, ज्ञान-मन्दिर, अपना घर, गांव को स्वच्छता रखना, समय पर भोजन अध्ययन करते समय पर सोना चाहिए। चाय, बीडी इत्यादि से दूर रहना चटाई से उठते ही देव गुरु का स्मरण करना, कोई आपकी निंदा किया, सुनते शान्त रहना, आप को बोध करने वाला आपसे छोडा हो तो उसे मान्य कर देना, गुरुजी के अनुकरण करते न हंसना चाहिए। गुरु सेवा करने से ज्ञानतीर्थ प्राप्त होता है. उसे कोई न लेता, वह बरबाद न होता, सदैव अन्य को देने से वृद्धि हो कर रहता है, घटता नही। माता-पिता की सेवा करना, उससें आपको अपने कार्य में सफलता मिलेगी आजतक मैंने आप लोगों की सेवा की। आज मैं आपसे निवृत्ति हो कर दूर जाता हूँ, दूर होते पास रहूँगा।

परमात्माने आप को धर्म नीति विचारर चलने का और स्मृति आरोग्य दे दें। यही आपसे मेरी याचना है। और आगे कुछ उपदेश देना चाहता था, कंठ से शब्द न निकला। विरह दुःख उबल रहा था, उसी अवस्था में छात्रों को वन्दना करके ज्ञानमन्दिर से बाहर आ गया, आँखों से अश्रुधारा बह रही थी, विद्यार्थियोंने सिसकते २ अनुगमन कर रहे थे। ...तो

बज चुके थे, गाँवभर जाने का समाचार मिलते ही आश्चर्य होकर एकत्र हो गये।

गाँव के बाहर दोनों गाडियाँ खडा किया था, गुरुजीके पीछे छात्रगण, गाँव के पुरुष स्त्रियाँ आंसु बहाते खडे हो गये थे। गुरुजीने गुरुताईने मल्लिकार्जून मन्दिर में जा कर वन्दना करके लौट आते एकाएक जो ग्रामीणों से उपहार मिला था, उसे मन्दिर के जीर्णोद्दार के लिए लौटा दिया, उन्होंने बिना मन से ले लिया। उनसे विदा होकर जयदेव से युक्त वीरेश अदृश्य हो गये।

अपना अध्यापक जीवन यशस्वी रीति से पार हो जाने का आनन्द वही डबल कर बाष्प से प्रकट हुआ था। विद्यार्थी बहुत देर तक उस दिशा को देखते रहे, जिस दिशा आचार्यने पदगात किया था।

विश्वनाथ उपशिक्षक को अपने गाँवसे आने का दस बज चुके थे। ज्ञानमन्दिर विद्यार्थियों की किताबों के साथ मौन धारण किया था। विश्वनाथ अन्दर आते हुए बाहर आकर देखता हूँ—

उन्होंने आँसू बहाते बिना मन से किताब लेने शाला की ओर जडीभूत होकर माँ से कदम उठा रहे हैं।

५

एक बरस के बाद परीक्षा लेने जब शिक्षण इन्स्पेक्टर आया तो तब उस स्कूल में सत्तर विद्यार्थियोंके स्थानपर सात थे उनमें कोई अपना नशापूर्ण गुरुके पैर को अन्य कोई छात्र दबा रहे थे।

६

चार बरस के बाद पन्चाक्षरी गुरुकृपासे अद्यामक होकर जयदेव आया, तभी विद्यालय में काफी विद्यार्थियों को देखा गया। पूर्व स्मृति चित्र उसको उनको एक के बाद एक चित्र-पट सा आ रहा था।

२०-१२-७१

अधिकार

१

पन्चायत चुनाव प्रारंभ होनेवाली थी, सब ग्रामों में उसकी तैयारी कर रहे थे। कोई उमेदवार पोष्ट-मास्टर की नोकरी को राजीनामा दिया, किसीने खेत को बेचना चाहा किसीने अपने घरको एक वार्ड के लिए दो-तीन उमेदवार खडे हो गये थे, इसका प्रभाव ऐसा पडा था कि घर के व्यवहार को भी भूल गये थे। किन्तु औरतें इससे असन्तुष्ट रहीं।

एक सदस्य जिस घर में जाता है, वह के आता है, दूसरा सदस्य उसके पीछे से जाकर अपने को वोट चलाने के लिये विनन्ति करता था। नागरिकों को इससे बहुत कठिनाई आ पडी कि किसको वोट दें? एक सभ्य शांत है, हमारे वार्ड के सदस्य होने को योग्य है। दूसरा दुष्ट नशाबाजी व्यभिचारी है। शीलता देखना हो तो स्वामि को वोट देना चाहिए, क्योंकि वह न्याय निर्णय ठीक से करता है, किन्हीं का प्रभाव उनपर नहीं पडता। यदि हमने उस पटेल को वोट नहीं दिया तो इस ग्राम में जीवन चलाना मुश्किल है। एक पुरुष दूसरे को बता रहा था – मतदान दिन से पूर्व ही में ससुराल को चले जाऊँगा, दो दिन रह कर फिर लौट आऊँगा।

बाजार मे, खेत में, जहाँ देखो वहाँ यही समचार सुनाया जाता था। चुनाव में यह देखा जाता है, सदस्योंने इस आशा पर अपना विजय का निश्चय कर लेते हैं कि बहुत पैसा दे दूंगा, तथा ग्रामवासी ज्यादातर मेरे धर्म का है। इसने धर्म और पैसेपर आधारित किया तो दूसरा बलात्कार पर विजय की आशा करता है।

२

अन्य ग्रामो का चुनाव समाप्त हुआ, अन्तिम रामपुर का अभी नहीं हुआ था। १०००से अधिक जनसंख्या है। इस छोटे से ग्राम में दो पक्ष अभी से नहीं, वातमान से हैं। नायिक

का पक्ष लक्ष्मी से तथा लाठी प्रभाव से संपन्न था। मतदान दो दिन बाकी रहा, दोनो पार्टियाँ ग्राम देवता के पास जाकर संकल्प कर के आ रहे थे। प्रति गल्ली में जाते हैं, आश्वासन देते हैं कि सभी सुविधाओं को पूर्ति करनें वचन बद्ध हमारे पक्ष हैं, किन्तु नागरिकोंने जान लिया था, यह वचन के निमित्य हैं, किन्तु निज सेवा के निमित्य नहीं। पिछले चुनाओं में इसी तरह कहते चले गये थे। अब फिर आये हैं। यदि वे सुधार करना हो बाहर रहकर कर सकते हैं, जैसे पूर्वजों ने किये हैं।

रविवार के दिन मत चलानें का निश्चय किया था। शनिवार को आरक्षक दल आया था। दोनों पार्टियाँ कूटनीति का अनुमोदन कर रहे थे। रात आठ बजे एक पार्टी एकत्र होते हुए प्रति एक वोट को एक रुपये देने का निश्चय किया गया। रात बारह बजे तक, बटवारा किया गया। उदय होते आठ बजे मतदान प्रारंभ हुआ, दोनों पार्टियोंने घर २ जाकर वोट देन को भेज देते थे। वे अन्दर जाते थे कोई पैसा पुरुषके सामने जो चिन्ह था उस पर मोहर लगाकर आते थे, अन्य कोई दूसरे चिन्ह पर। बाहर जो २ संकेत करता था उसे उसी तरह बता कर घर चले जाते थे, यह मतदान सायं पांच बजते तक रहा। रात में तालाब के घाट पर बैठते यहाँ-वहाँ विजय का अन्दाज लगा रहे थे।

बुधवार को निर्णय हुआ कि पाटील पार्टी से कुछ ही मतोंसे जीत लिया था। पन्चायत प्रधान स्थान नाईक को मिला।

यह विजय दूसरा था। पिछले पांच वर्षों में भी चेअरमन स्थान पर प्रतिष्ठित था। पान्च दिन के बाद सोमवार के दिन सन्मान समारंभ करने का उसके पार्टीने निश्चय किया। उस दिन एक सरकारी अफसर आया था। पन्चायत आफिस को शृगांर किया गया। श्याम ७ बजे भाषण प्रारंभ हुआ। उस अतिथि को अद्यक्ष बनाया गया। नायक के प्रीय दोस्त भीमसेन इस समारंभ में प्रमुख पात्र धारण किया था। तेरह विजयी सदस्योंने सभा में विस्मित भाव से बैठे थे, भीमसेन ने सभा का परिचय देनें के बाद अध्यक्षने बताया–

आप लोगोंसे जो भारी परिश्रम का फल, यह विजय समारंभ का द्योतक हैं. इससे मालुम होता हैं नाईक का पक्ष विवेक से पूर्ण है। प्रेम बल से विजयी होकर घर में बैठना नहीं हैं, किन्तु समाज को सुधार करना है। जो आवश्यक है सरकार से मांग कर पूर्ति कर लेना है। शिक्षा समिति, ग्रामरक्षा समिति इत्यादियों को रचना करके सरकारके मार्गदर्शन में आगे बढ़ जाना चाहिए। समाज सेवा से जो पुण्य मिलता है, वह दूसरे में नही मिलता। जन सेवा ही जनार्धन सेव है। आदम की कहानी मे मालुम होता है, जो समाज सेवा करता है उनका नाम स्वर्णाक्षर में प्रथम लिखा जाता है। पूर्वी शरण साधुओं ने कायक के बिना नहीं रहते थे। वे सन्यासी होकर भी कायक करते थे। उसके साथ समाज सुधारण करते थे। वे अन्तर्भूत होकर कई शतमान होनेपर भी उनका नाम और बोधामृत आज

भी स्थिर है। आप नाईक के मार्ग दर्शन में अपनें गांव को सुधार लेंगे ऐसी आशा करके भाषण समाप्त करता हूँ।

इसके बाद नाईकको कुछ बोलने सदस्योंनें संकेत किया उसके इच्छानुसार श्री नाईक ने बोलना प्रारंभ किया —

प्रीय अतिथिजनों तथा दोस्तों, आज यह समारंभ विजय का हैं। पिछले पान्च बरस चेअरमन का अधिकार किया था, कारण मुझे समाज सुधार करने का अनुभव है, यहाँ तक श्री अतिथि महाशयने जो निर्देश रखा है, उनपर आरूढ होकर चलनें की प्रतिज्ञा करता हूँ। आप लोग आपस में मनमुटाव को त्याग कर मुझसे मिलकर भरसक आप लोगों का तथा समाज की सेवा करने को मेरे हाथ मजबूत करें। सदा आपकी सेवा करने को बिना विश्राम से सिद्ध हूँ। सदा आपका आशीर्वाद रहे। इतना कह के आप सब को धन्यवाद देकर भाषण समाप्त करता हूँ।

उस स्थान से नायिकने अभी आगे पैर नहीं रखा था' कही से एक अमंगल वस्तु उपरसे टपक पडा। वह किस दिशा से आया था, किसी को मालुम उस समय नही हुआ। सभा को राष्ट्रगीत के बिना विसर्जित किया गया, क्योंकि आगे और अधिक बढ़ न जाय। अतिथि को रात में ही भिजवा दिया गया। लोग तीव्र गति से घर का रहा देख लिया। अफसरने धान लिया था कि यहाँ कुछ कडुआ अवश्य है।

३

रामपुर के इस कृति चार ग्रामों में प्रसारित हुआ था। पिछले पांच वर्षों में जो २ व्यवहार किया था, उन विषयपर विवरण प्रारंभ हुआ था। जन मार्गों को ठीक करना, पेड लगाना मार्ग के दोनों तरफ नियम के अनुसार प्रकाश स्थंभ को रखना इत्यादि चेअरमन का काम रहता है। पन्चायत कानून को तो कभी भी न देखा था। इस चेअरमन अधिकार में कोई २ पर प्रतिकार लेना प्रारंभ किया था।

जो चुनाव में प्रतिपक्ष में वोट प्रचार किया था, उसपुरुष के घर को आग लगवायी गई। पशुओं को सप्ताह में विश्रान्ति देने निमित्त सोमवार को निर्णय किया था। सोमवार के दिन जो पुरुष बैलों से काम लिया तो उस पुरुष को दस रुपया सजा के रूप में असूल किया जाता था। वह रकम क्या हुआ किसी को न पता है। पन्चायत को एक सौ रुपये तक जुर्माना वसूल करने को अधिकार है। कोई अपराध किया उनको जाति बाहर किया जाता था। जब वह कमीटे के पास नतमस्तक होता था, तब अपना मन चाहे सजा पैन के रूप में कहा जाता था। उसमें एक सौ से लेकर पांच सौ तक वसूल कर लेते थे। वसूल करने के बाद इन कामों को राममन्दिर के जीर्णोद्धार के नाम से रखा जाता था। ऐसी घटना तीन-चार बन चुके थे। उस रकम को कोई समाचार नहीं। तालुक अधिकारी से जो दो थैला शक्कर मिलता था, उनको उस शहर में बेचकर घर लौटना था। गांव में गोदाम

नहीं था, सरकार से मंजूर हुआ, नाईक कांट्रक्ट हुआ। वह पांच साल से यथा–तथा रहा था। जब अफसर आ जाते हैं तब उनका अन्दर बाहर त्रुटि करके भिजवा देता था। एक विधवा युवती स्त्री को लेकर ससुराल के विरुद्ध काम भी चलाया सुना जाता है. एक बार कचहरी में झूटी गवाही देने गया था। एक प्रश्न का उत्तर देने में गिर पडा। न्यायाधीश को निश्चय हुआ कि ये गवाही सत्य नहीं है। तब उसने सायं पांच बजनें तक खडे रहने की आज्ञा करते, बाद छोड दिया। तब से अब तक गवाही नहीं बनता।

इससे पूर्व ग्रामाधिकारियोंने दुर्गा जात्रा में चाण्डाल जो प्राणि हिंसा करते थे, उसको बन्द किये गये थे। पिछले चुनाव में नाईक को उन्होंने वोट देने के कारण, दुर्गामन्दिर जात्रा करने की आज्ञा दी, तथा स्वयं दो थैला गेहूँ, चावल खरीद कर दिया। इसके बाद ग्राम में दो सौ रुपये इक्कट्ठा करके रखा इमने कभी कोई सात्विक, धार्मिक कार्य के लिये एक पैसा नहीं दिया था, परन्तु इस हिंसा को दिया। इन साहित्यों सें एक महिष, पन्द्रह से पचास तक बकराओं को देवि के सामने अर्पण किया गया।

एक संकल्प पुरुष बता रहा था कि मैंनें पांच बकरे को दुर्गा माता के सामने अर्पण करने का संकल्प किया था, श्री नाईक की कृपा से अब साध्य हुआ। इस बात को धार्मिक ने सुनकर उस पुरुष से कहा कि वह संकल्प बकरा, भैंसा से ही है ?

व्याघ्र, गज, केशरी क्यों नही ? उसने सुनते चुप हो गया।

सरकारने सार्वजनिक स्थान पर संकल्प के नाम पर हिंसा करने को मना किया था। किंतु इस नाईक से प्रारंभ हुआ। जब पोलीस इनस्पेक्टर को किसी ने गुप्त पत्र से सूचित किया, तब अधिकारी आ गये, तृप्ति होकर जाते समय इस प्रकार रिपर्ट किया था –

श्री नाईक के मार्गदर्शन में, ऐसा नही हो सकता, कोई प्रतिवादिने इसको प्रसारित किया है।

वधु – वर के विनिमय के व्यवहार में भी उन्होंने अपनी बेवकूफी करना नहीं भूला। इन महाकृत्यों से भरा हुआ उस नाईक के बारे में दो अनुभवी वृद्धोने आपस में चर्चा कर रहे थे। दोनों अन्तिम जिसकी लाठी उसकी भैंस पर आते सो गये।

४

पैंतालीस से पचास वर्ष के आयु मे वह भद्रशील था। जन्म एक धर्म पुरुष के घर में हुआ था। नाईक के पिता प्रभु रहते तक वे ही पन्चायत करता था। धार्मिक, सामाजिक, कार्यों को स्वयं आगे जाकर पूर्ण करता था। सुबह पांच बजे उठते ही स्नान करके देवदर्शन करने के बाद खेत जाकर परिश्रमधारी बनता था। दुपहर को घर को आ जाता। श्याम के समय सामाजिक व्यवहार को पूर्ण करके घर जाता था। नाम के जैसे

उसका प्रभुत्व समाज में था। वह मर जाने के बाद उस घर में अब तामसी व्यवहार, तामसी आहार का गमना गमन चलता है।

५

शीलापहरणके विकट परिस्थिति के कारण एक गरीब पुरुष ने अपने घर में रात फाँसी से प्राण त्याग किया था। उस घटना को गुप्त रखने का प्रयत्न किया तो वह नहीं हो सका। आरक्षक कचहरी को सारांश लिखकर भेज दिया गया। इधर उसकी खूबसूरत रोहिणी पत्नि को बुलाकर बताया इस शव को यहीं दफन करने को पांच सौ लगेगा, नही तो उसको दवाखाने को ले जाएंगे, आगे जिल्हा कोर्टमें दावा सुरु हो जाएगा। उसके लिए जो पैसा खर्च करना पडेगा। इसलिए यही हम समाप्त कर देंगे, कहते तीन सौदेते हुए, उस प्रकरणको समाप्त किया। अधिकारी ने रिपोर्ट लेते समय इस प्रकार लिखा था—इस पुरुष को पेटकी पीडा बहुत दिनसे थी, किसी औषध से इलाज नही हुआ, उसका ताप सहन करने की शक्ति नहीं थी। इसलिए यह घटना घटी। इस प्रकार रिपोर्ट करके सदस्य उसकी पत्नि से हस्ताक्षर लेकर एक घटे में रवाना हो गये।

धर्म के प्रकार दफन करना था, परन्तु उसको दहन किया गया। क्योंकि पुनरपि शव की परीक्षा प्रसंग न लिया जाय। शव दहन करते समय दहक बता रही थी — यह पेटमें भरा दर्द निष्पत्ति का कारण नहीं, अपना उपभोग पुष्ट अधिकारी का

कूट कारण हैं। इस ज्वाला की भाषा नाईंकने समझ लिया होगा अन्य पुरुषोने नहीं।

इस प्रकार अधिकार प्रवाह विविध रूप में बह रहा था। सजा से जो रकम आता था, उसका उपयोग ताश खेलना, खाने पीने में समाप्ति हो जाता था। होली का दिन था रंग खेल रहे थे। ये बलवान ताश खेल रहे थे समीप के ग्राम के प्रमुख पुरुष इसमें भाग लेनें आये थे। ग्रामके बाहर एक नया घर था। वहाँ कोई नहीं रहना था। केवल उधर दो भैंसें बांध दी जाती थीं उस घर के मालिक से अनुमति लेकर वहाँ पूर्व से कभी कभी खेल रहे थे। कोई सौ से हजार तक प्राप्त करते थे।

ताश खेलते खेलते रात हो गयी, वहीं भोजन बनवाने का निश्चय हुआ। एक रसोई बनानेवाला था, उसको जिस दिन वहाँ काम करता था उस दिन तीन रुपये वेतन साथ खाना भी मिलता था। रात नौ बजे एक कुंभ शराब लाया गया, साथ साथ एक पुष्टी बकरा भी। खूब पीते खेल रहे थे। इनके साथ उस पुरुषने इतना पी रखा था कि बकरे के बदले में दो दिन आयु का भैंसा को खतम करके रसोई बना दिया, उस थोडे मंद प्रकाश में खेल को समाप्त करके उस पदार्थ को खूब स्वीकार करके वहीं सो गये। सुबह होने पर भी उन्हें परवाह नहीं थी। जब सेवकने आकर देखता है कि दो दिन आयु का भैंसा को खतम करके एक कोने में मुण्ड रखा गया था। उसका अवशेष जहाँ-तहाँ सूचित दे रहा था। उसने मालिक से बताया।

घरवालों ने आकर देखते व्यथित होकर गाली देते हुए चलें गये। उस नायिका को उठा कर इसको दिखाया तो अकबर से प्रश्नाताप प्रकट करते पैर को पकड लिया, माफी मांग कर साथ उसका दाम चुकाया। फिर ऐसा काम न करने का वचन देकर किसी के सामने प्रकट न करने को बताया। परन्तु उसकी पत्नि से गांव भर इसका मकरन्द बह गया था।

सूर्यास्त के समय एक वृद्धने मन्दिर के सामने विश्राम लिया था। पास प्रमुख सदस्य बैठे थे। एक चाण्डाल पुरुषने उसके सामने से ही इसको सलाम करके जा रहा था, वृद्धने उसे पुकार कर कहा–

आज से इस ग्राममें कोई पशु मर जाय तो ले जाने की आवश्यकता नहीं, उसे स्वीकार करने वाले यहीं काफी महापुरुष मिलते हैं।

उसने समझ लिया, और एक बार राम २ करके चला गया। अन्य सदस्य चुपके से एक के बाद एक चले गये। दीपाराधन करने का समय हुआ था, बसवेश्वर मन्दिर में जाकर नमस्कार करके वृद्धने गुनगुनाते निवास की तरफ जा रहा था–

बसवराज जो लिखकर गया है वह सच्च है, मैं चाण्डाल उनको ही मान लिया था, किंतु हत्याकृति से चाण्डाल बन जाता है। अन्य से नहीं। बसव ! ! सच्च है तुम्हारी वाणि सच्च है। अभी और क्या २ होता है, भगवान जाने !

६

रामपुर के नजदीक रंगपुर नामक एक छोटासा गांव है। पिछले साल जो अकबर के घर में घटना हुयी, तबसे इस ग्राम को आकर ताश खेलते थे, साथ पीकर खाते थे। इस साल के चुनाव होने के बाद इधर आना एक साल से नाईक अधिक किया था। उसका विशेष वास्तव्य रामनाथ के घर में होता रहा।

चैत्र मास का महिना था, तारागण प्रकाश कर रहे थे, रात के नोवज चुके थे। नागरिक भोजन करके विश्राम ले रहे थे। ग्राम के कुछ निवासी मन्दिर में धर्मशालामें सोने जा रहे थे। अचानक पोलीस अधिकारी मोटर लेकर उपस्थित हो गये। उससे ग्राममें हलचल मच गई। ग्राम अधिकारी को बुलाया गया। और गांव की चारों ओर घेर लिया, क्योंकि कोई किसी तरह रात में फरार न हो जाय। पोलीसने विधवा अठारह वर्षीय सुन्दरी गोदावरीको पिता रामनाथ के साथ ले आये अन्दर जा कर गोदावरी के शरीर की परीक्षा करने के बाद अपराध सिद्ध हुआ। उसने नाईकको अपराधी बनाया। यह समाचार उदय होने तक गुप्त रखा गया। चार पोलीसोंको इनका पहरा करने आदेश करके रामपुर को पोलीस इन्स्पेक्टर रात बारह बजे जाकर उस ताश घर को घेरा नाईकके साथ उन तीन साथियों का पकड कर लौटते दो बजे रंगपुर को आकर विश्राम लिया। नाईक ने समझा था कि यह ताश का परिणाम है। किन्तु सूर्योदयके होने के बाद गांव के सब लोगों के सामने पांच छः मास की गर्भिणी गोदावरी ने नाईक से स्पष्ट शब्दों में कहा—

उस दिन पिताजी घर में नहीं थे, उस समयका लाभ तुमने नहीं पाया ?

गुप्त पत्र के आधारपर इनस्पेक्टरने अपराधीको सिद्ध किया। इस अपराध के साथ ही गादाम का न्याय भी शामिल हुआ। न्यायालय में युक्त शिक्षा हो गयी। लोहे के कंगन हाथ में पहना हुआ नाईक बिना कंगन पोलीस के साथ दीर्घावधि विश्राम लेने उस महाद्वार में अन्तर्भून रहा, छोटे द्वारसे जाते हुए एक अन्धेरे कमरे तक प्रस्थान किया। साथियों को एक दो दिन तक हाथ उठाकर मुक्त किया गया।

कुछ दिनों के बाद रामपुर के निवासियों को विदित हुआ कि ग्राम नाईक को पवित्र श्री कृष्ण जन्मस्थान में दीर्घावधि दिनोंतक प्रशान्त रहने का प्रमाण-पत्र मिला है।

२५-७-७२

समाप्त

श्री निरुपाधि स्वामी कृत अन्य कृतियाँ

(कन्नड)

१) श्री मडिवालेश्वर चरिते (भामिनि षट्पदि) ५-००

२) चिन्मूर्ति (त्रिपदि) ५-००

(हिंदी)

३) रसगीत (पद्य) २-००

४) सप्ततीर्थ (कहानियां) २.००

(प्रकश्य ग्रंथ)

५) माया कल्याण (पद्य-हिंदी)